धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ

गजेन्द्र ठाकुर

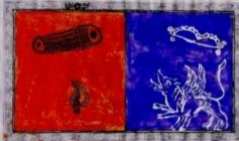
विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (विदेह www.videha.co.in) पेटारसँ

ISSN 2229-547X VIDEHA ***सम्पादक:*** गजेन्द्र ठाकुर।





विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्






Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

अनुक्रम

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant- Robert Louis Stevenson

....

Videha: Maithili Literature Movement

धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ

गजेन्द्र ठाकुरक जन्म भागलपुरमे सन् १९७१ मे भेलन्हि आ आइ काल्हि ओ दिल्लीमे रहै छथि।

धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ

गजेन्द्र ठाकुर

श्रुति प्रकाशन, नई दिल्ली

Dhangi Baat Banebaak daam agoobaar pene chhan: An Anthology of Maithili ghazals by Gajendra Thakur first published in 2012 by M/s Shruti Publications, India
Price: Rs.100

पहिल संस्करण : 2012

ISBN : 978-93-80538-51-8

श्रुति प्रकाशन :रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स-(०११)२५८८९६५७
Website:http://www.shruti-publication.com

e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com
Printed at: Ajay Arts, Delhi-110002
Distributor : Pallavi Distributors, Ward no- 6, Nirmali (Supaul), मो.- 957245.4.5, 9931654742

Dhangi Baat Banebaak daam agoobaar pene chhan: An Anthology of Maithili ghazals by Gajendra Thakur

धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ

गजेन्द्र ठाकुर

अनुक्रम

मैथिली गजल शास्त्र

गजलक उत्पत्ति अरबी साहित्यसँ मानल जा सकैत अछि मुदा ओतए ई अरकान माने कोनो उत्तेजक घटनाक वर्णन विशेषक रूपमे छल। मुदा गजल जँ ऐ अरकान सभक समुच्चय अछि तँ से फारसीक देन छी। फेर ओतऽसँ गजल उर्दू-हिन्दी आ आब मैथिलीमे आएल अछि।

मायानन्द मिश्र मैथिली गजलकेँ गीतल कहलन्हि, मुदा हम एतऽ ओकरा गजले कहब आ अरबी फारसीक छन्द-शास्त्रक किछु शब्दावलीक प्रयोग करब। से मैथिली गजल शास्त्रक लेल शब्दावली भेल "अरूज" ।

बहर: उन्नैस टा अरबी बहर होइत अछि। एतेक बहर मोन रखबाक आवश्यकता नै। किएक तँ बहर माने थाट, राग-रागिनी। ऐ उन्नैसटा अरबी बहरक बदला मैथिली लेल नीचाँमे भारतीय संगीत (स्रोत स्व. श्री रामाश्रय झा रामरंग) दऽ रहल छी। देवनागरी आ मिथिलाक्षरमे जे बाजल जाइत अछि सएह लिखल जाइत अछि (ह्रस्व इ सेहो मैथिलीमे अपवाद नै अछि) से ह्रस्व आ दीर्घ स्वरकेँ गनबाक विधि मैथिलीमे भिन्न अछि, सेहो एतऽ देल जाएत। जइ बहरमे शेरमे आठ (माने शेरक दुनू मिसरामे चारि-चारि) अरकान हुअए से भेल मसम्मन आ जइ बहरमे शेरमे छह (माने शेरक दुनू मिसरामे तीन-तीन) अरकान हुअए से भेल मुसद्दस । एतऽ मैथिलीमे विभक्ति सटा कऽ लिखबाक वैज्ञानिक आधार फेर सिद्ध होइत अछि कारण गजलमे जे विभक्ति हटाइयो कऽ लिखब तैयो अरकान गनबा काल तेना कऽ गानऽ पड़त जेना विभक्ति सटल हुअए, विभक्ति लेल अलगसँ गणना नै भेटत।

जइ बहरमे एक्केटा रुक्न हुअए से भेल मफरिद बहर आ जइमे एकटासँ बेशी रुक्न हुअए (रुक्नक बहुवचन अराकान) से भेल मुरक्कब बहर। दूटा अराकान पुनः आबए तँ ओकरा बहरे-शिकस्ता कहल जाएत।

मिसरा आ शेर: मैथिली गजलमे दू पाँतीक दोहा जे कोनो उत्तेजक घटनाक विशेष वर्णन करैत अछि तकरा शेर (एक पाँती मिसरा) कहल जाइ छै। दुनू पाँती एकट्ठे भेल शेर आ ओइ दुनू पाँतीकेँ असगरे मिसरा कहब। मतलाक दुनू मिसरामे एकरंग काफिया माने तुकबन्दी हएत।

ऊला आ सानी: शेरक पहिल मिसरा ऊला आ दोसर मिसरा सानी भेल।

दू मिसरासँ मतला आ दू पाँतीसँ दोहा बनल।
अरकान (रुक्न) आ जिहाफ: आठ टा अरकान (एकवचन रुक्न) सँ उन्नैस टा बहर बहराइत अछि। से अरकान मूल राग अछि आ बहर भेल वर्णनात्मक राग। अरकानक छारन भेल जिहाफ । जेना वरेण्यम् सँ वरेणियम्।
तकतीअ: दू पाँतीक कोनो उत्तेजक घटनाक विशेष वर्णन करैत दोहा जे मिसरा वा शेर अछि आ कए टा मिसरा वा शेर मिलि कऽ गजल बनैत अछि, तकर शल्य चिकित्सा लेल *तकतीअ* अछि। से मिसरा कोन राग-रागिनीमे अछि तकर *तकतीअ*सँ बहर ज्ञात होइत अछि।
मतला (आरम्भ) आ मकता (अन्त): गजलमे पहिल शेर मतला आ आखिरी शेर मकता भेल। मतलाक दुनू मिसरामे तुक एकरंग होइत अछि आ मकतामे कवि अपन नाम दै छथि। मकताक कखनो काल लोप रहत, एकरा सन्दर्भसँ बुझब थिक, मतला सेहो कखनो काल गजलमे नै रहैत अछि मुदा प्रारम्भमे गजलकारकेँ ई रखबाक चाही।
काफिया आ रदीफ: तुकान्त काफियाक बादक वा काफियायुक्त शब्दक पहिनेक अपरिवर्तित शब्द/ शब्द समूहकेँ रदीफ कहै छिऐ। काफिया युक्त शब्द बदलत मुदा रदीफ नै बदलत। काफिया वर्ण वा मात्राक होइ छै आ रदीफ शब्द वा शब्द समूहक।
दूटा काफियाबला शेर जू काफिया कहल जाइत अछि।
एक दीर्घक बदला दूटा ह्रस्व सेहो देल जा सकैए।
जेना काफिया वर्ण आ मात्राक संग शब्दकेँ सेहो प्रयुक्त करैत अछि तहिना रदीफ एकर विपरीत शब्द आ शब्दक समूहमे सन्निहित वर्ण आ मात्राकेँ सेहो प्रयुक्त करिते अछि। ऐ तरहेँ पहिल पाँतीमे जँ शब्द समूह रदीफ अछि तँ दोसर पाँतीमे ओकर कोनो एक शब्द दोसर शब्दक अंंग भऽ सकैए आ ओइ काफिया युक्त शब्दमे रदीफक उपस्थिति रहि सकैए। दूटा काफियाक बीचमे सेहो रदीफ रहि सकैए, रदीफ ऐ तरहेँ अनुपस्थितसँ लऽ कऽ एक शब्द, शब्दक समूह वा वाक्य भऽ सकैत अछि जे अपरिवर्तित रहत। काफिया युक्त शब्द गजलमे बदलैत रहत। मैथिली व्याकरणक दृष्टिसँ अपरिवर्तित मात्रा अपरिवर्तित अपूर्ण शब्दकेँ बिना रदीफक गजल कहि सकै छिऐ, कारण ई काफियाक मूल विशेषता छिऐ

(अपरिवर्तित मात्रा वा अपरिवर्तित अपूर्ण शब्द) .. आ जँ शब्द वा शब्दक अपरिवर्तित समूह दृष्टिसँ देखी तँ एतऽ रदीफ अनुपस्थित अछि। ओना रदीफ अनुपस्थित सेहो रहि सकैए, शास्त्रीय दृष्टिसँ कोनो दिक्कत नै अछि। मुदा प्रारम्भमे बिना रदीफक गजलक बदला "एक शब्द, शब्दक समूह वा वाक्य" जे अपरिवर्तित रहए, माने रदीफक प्रयोग करू।

बहर आ संगीत

पहिने कमसँ कम ३७ 'की' बला की-बोर्ड लिअ।

ऐमे १२-१२ टा क तीन भाग करू। १३ आ २५ संख्या बला की *सा* आ *सां* दुनूक बोध करबैत अछि। सभमे पाँचटा कारी आ सातटा उज्जर 'की' अछि। प्रथम १२ मंद्र सप्तक, बादक १२ मध्य सप्तक आ सभसँ दहिन १२ तार सप्तक कहबैछ। १ सँ ३६ धरि मार्करसँ लिखि लिअ। १ आ तेरह सँ क्रमशः वाम आ दहिन हाथ चलत।

१२ गोट 'की' केर सेटमे ५ टा कारी आ सात टा उज्जर 'की' अछि।

प्रथम अभ्यासमे मात्र उजरा 'की' केर अभ्यास करू। पहिल सात टा उजरा 'की' -सा, रे, ग, म, प, ध, नि- अछि आ आठम उजरा की तीव्र-सं - अछि जे अगुलका दोसर सेटक - स - अछि।

वाम हाथक अनामिकासँ स, माध्यमिका सँ रे, इंडेक्स फिंगर सँ ग, बुढ़बा आँगुरसँ म, फेर बुढ़बा आँगुरक नीचाँसँ अनामिका आनू आ प, फेर माध्यमिकासँ ध, इंडेक्स फिंगरसँ नि, आ बुढ़बा आँगुरसँ सां- ऐ हिसाबसँ बजेबाक प्रयास करू। दहिन हाथसँ १२ केर सेट पर पहिल 'की' पर बुढ़बा आंगुरसँ स, इंडेक्स फिंगरसँ रे, माध्यमिकासँ ग, अनामिकासँ म, फेर अनामिकाक नीचाँसँ बुढ़बा आँगुरकेँ आनू आ तखन बुढ़बा आंगुरसँ प, इंडेक्स फिंगरसँ ध, माध्यमिकासँ नि आ अनामिकसँ सां बजाउ। दुनू हाथसँ सां दोसर १२ केर सेटक पहिल उज्जर 'की' अछि। आरोहमे पहिल सेटक सां अछि तँ दोसर सेटक प्रथम की रहबाक कारण सा।

दोसर गप जे की-बोर्डसँ जखन अवाज निकलए तँ अपन कंठक आवाजसँ एकर मिलान करू। कनियो नीच-ऊँच नै हुअए। तेसर गप जे संगीतक वर्ण अछि सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां एकरा मिथिलाक्षर/देवनागरीक वर्ण बुझबाक गलती नै करब। आरोह आ अवरोहमे स्वर

कतेक नीच-ऊँच हुअए तकरे टा ई बोध करबैत अछि। जेना कोनो आन ध्वनि जेना “क” केँ लिअ आ *की-बोर्ड*पर निकलल सा, रे... केर ध्वनिक अनुसार “क” ध्वनिक आरोह आ अवरोहक अभ्यास करू।

ऐ सातू स्वरमे षडज आ पंचम मने *सा* आ *प* अचल अछि, एकर सस्वर पाठमे ऊपर नीचाँ हेबाक गुंजाइश नै छै। *सा* अछि आश्रय आकि विश्राम आ *प* अछि उल्लासक भाव। शेष जे पाँचटा स्वर सभटा चल अछि, मने ऊपर नीचाँक अर्थात् विकृतिक गुंजाइश अछि ऐमे। *सा* आ *प* मात्र शुद्ध होइत अछि, आ विकृति भऽ सकैत अछि दू तरहेँ, शुद्धसँ स्वर ऊपर जाएत आकि नीचाँ। यदि ऊपर रहत स्वर तँ कहब ओकरा तीव्र आ नीचाँ रहत तँ ओ कोमल कहाएत। म कँ छोड़ि कऽ सभ अचल स्वरक विकृति होइत अछि नीचाँ, तखन बुझू जे “रे, ग, ध, नि” ई चारि टा स्वरक दू टा रूप भेल कोमल आ शुद्ध। म केर रूप सेहो दू तरहक अछि, शुद्ध आ तीव्र। रे दैत अछि उत्साह, ग दैत अछि शांति, म सँ होइत अछि भय, ध सँ दुःख आ नि सँ होइत अछि आदेशक भान। शुद्ध स्वर तखन होइत अछि, जखन सातो स्वर अपन निश्चित स्थानपर रहैत अछि। ऐ सातोपर कोनो चेन्ह नै होइत अछि।

जखन शुद्ध स्वर अपन स्थानसँ नीचाँ रहैत अछि तँ कोमल कहल जाइत अछि आ ई चारिटा होइत अछि, ऐमे नीचाँ क्षैतिज चेन्ह देल जाइत अछि, यथा- रे̱, ग̱, ध̱, नि̱।

शुद्ध आ मध्यम स्वर जखन अपन स्थानसँ ऊपर जाइत अछि, तखन ई तीव्र स्वर कहाइत अछि, ऐमे ऊपर उर्ध्वाधर चेन्ह देल जाइत अछि। ई एकेटा अछि- मं।

एवम प्रकारे सात टा शुद्ध यथा- सा, रे, ग, म, प, ध, नि, चारिटा कोमल यथा- रे̱, ग̱, ध̱, नि̱ आ एकटा तीव्र यथा मं सभ मिला कऽ १२ टा स्वर भेल।

ऐमे स्पष्ट अछि जे *सा* आ *प* अचल अछि, शेष चल वा विकृत।

आब फेर की-बोर्ड पर आउ। ३७ टा की बला की-बोर्ड हम ऐ हेतु कहने छलौं, किए तँ १२, १२, १२ केर तीन सेट आ अंतिम ३७म तीव्र सां हेतु। सप्तकमे सातटा शुद्ध आ पाँचटा विकृत मिला कऽ १२ टा भेल!

वाम कातसँ १२ टा उजरा आ कारी *की* मंद्र सप्तक, बीच बला १२ टा *की* मध्य सप्तक आ २५ सँ ३६ धरि *की* तार सप्तक कहल जाइत अछि।
आरोह- नीचाँसँ ऊपर गेनाइ, जेना मंद्र सप्तकसँ मध्य सप्तक आ मध्य सप्तकसँ तार सप्तक।
मंद्र सप्तकमे नीचाँ बिन्दु, मध्य सप्तक सामान्य आ तार सप्तकमे ऊपर बिन्दु देल जाइत अछि, यथा-
स़, ऱ, ग़ ,म़, प़, ध़, ऩ सा, रे, ग, म, प, ध, नी सां, रें, गं, मं, पं, धं, निं
अवरोह- तारसँ मध्य आ मध्यसँ मंद्रकेँ अवरोह कहल जाइत अछि।
वादी स्वर- जइ स्वरक सभसँ बेशी प्रयोग रागमे होइत अछि।
समवादी स्वर- जकर प्रयोग वादीक बाद सभसँ बेशी होइत अछि।
अनुवादी स्वर- वादी आ समवादी स्वरक बाद शेष स्वर।
वर्ज्य स्वर- जइ स्वरक प्रयोग कोनो विशेष रागमे नै होइत अछि।
पकड़- जइ स्वरक समुदायसँ कोनो राग विशेषकेँ चिन्है छी।
गायन काल सेहो सभ राग-रागिनीक हेतु निश्चित रहैत अछि। १२ बजे दिनसँ १२ बजे राति धरि पूर्वांग आ १२ बजे रातिसँ १२ बजे दिन धरि उत्तरांग राग गाओल-बजाओल जाइत अछि।
पूर्वांग रागक वादी स्वरमे कोनो एक टा (सा, रे, ग, म, प) होइत अछि।
उत्तरांगक वादी स्वरमे (म, प, ध, नि, सा)मे सँ कोनो एक टा होइत अछि।
सूर्योदय आ सूर्यास्तक समयमे गाओल जाएबला रागकेँ संधि प्रकाश राग कहल जाइत अछि।

रागक जाति

रागक आरोह आ अवरोहमे प्रयुक्त स्वरक संख्याक आधारपर रागक जातिक निर्धारण होइत अछि।
एकर प्रधान जाति तीन टा अछि। १.संपूर्ण (७) २.षाड़व(६) ३.औड़व(५) आ ऐमे सामान्य स्वर संख्या क्रमशः ७, ६, ५ रहैत अछि।
आब ऐ आधारपर तीनूकेँ फेँटू।
संपूर्ण-औड़व की भेल? पहिल रहत आरोही आ दोसर रहत अवरोही। कहू आब। (७,५) ऐमे सात आरोही स्वर संख्या आ ५ अवरोही स्वर संख्या अछि। संपूर्णक सामान्य स्वर संख्या ऊपर लिखल अछि (७) आ

औड़वक (५)। तखन संपूर्ण-औड़व भेल (७,५)। अहिना ९ तरहक राग जाति हएत। १.संपूर्ण-संपूर्ण (७,७) २.संपूर्ण-षाड़व (७,६) ३.संपूर्ण-औड़व(७,५), ४. षाड़व-संपूर्ण- (६,७), ५. षाड़व- षाड़व - (६,६), ६. षाड़व -औड़व (६,५), ७.औड़व-संपूर्ण(५,७), ८.औड़व- षाड़व(५,६), ९. औड़व- औड़व(५,५)।

थाट:

थाट- एकटा सप्तकमे सात शुद्ध, चारिटा कोमल आ एकटा तीव्र स्वर (१२ स्वर) होइत अछि। ऐमे सात स्वरक ओ समुदाय जकरासँ कोनो रागक उत्पत्ति होइत अछि, तकरा थाट वा मेल कहल जाइत अछि।

थाट रागक जनक अछि, थाटमे सात स्वर होइ छै (संपूर्ण जाति)। थाटमे मात्र आरोही स्वर होइत अछि। थाटमे एक्के स्वरक शुद्ध आ विकृत स्वर संग-संग नै रहैत अछि। विभिन्न रागक नामपर थाट सभक नाम राखल गेल अछि। थाटक सातो टा स्वर क्रमानुसार होइत अछि आ ऐमे गेयता नै होइ छै।

थाट १० टा अछि।

१. आसावरी-सा रे ग म प ध नि

२. कल्याण-सा रे ग मं प ध नि
३. काफी-सा रे ग म प ध नि
४. खमाज-सा रे ग म प ध नि
५. पूर्वी-सा रे ग मं प ध नि
६. बिलावल-सा रे ग म प ध नि
७. भैरव-सा रे ग म प ध नि
८. भैरवी-सा रे ग म प ध नि
९. मारवा-सा रे ग मं प ध नि
१०. तोड़ी-सा रे ग मं प ध नि

वर्ण:

वर्णसँ रागक रूप-भाव प्रगट कएल जाइ छै। एकर चारिटा प्रकार छै।

१.स्थायी- जखन एकटा स्वर बेर-बेर अबैत अछि, ओकर आवृत्ति होइत अछि।

२.अवरोही- ऊपरसँ नीचाँ होइत स्वर समूह, एकरा अवरोही वर्ण कहल जाइत अछि।
३.आरोही- नीचाँसँ ऊपर होइत स्वर समूह, एकरा आरोही वर्ण कहल जाइत अछि।
४.संचारी- जइमे उपरका तीनू रूप लयमे हुअए।
लक्षण गीत: रचना जइमे बादी, सम्बादी, जाति आ गायनक समय केर निर्देशक रागक लक्षण स्पष्ट भऽ जाए।
स्थायी: कोनो गीतक पहिल भाग, जे सभ अन्तराक बाद दोहराओल जाइत अछि।
अन्तरा: जकरा एक्के बेर स्थायीक बाद गाओल जाइत अछि।
अलंकार/पलटा: स्वर समुदायक निअमबद्ध गायन/ वादन भेल अलंकार।
आलाप: कोनो विशेष रागक अन्तर्गत प्रयुक्त भेल स्वर समुदायक विस्तारपूर्ण गायन/ वादन भेल आलाप।
तान: रागमे प्रयुक्त भेल स्वरक त्वरित गायन/ वादन भेल तान।
तानक गति द्रुत होइत अछि आ ऐमे दोबर गतिसँ गायन/ वादन कएल जाइत अछि।
आब आउ तालपर। संगीतक गतिक अनूरूपेँ ई झपताल- १० मात्रा, त्रिताल- १६ मात्रा, एक ताल- १२ मात्रा, कहरवा- ८ मात्रा, दादरा- ६ मात्रा होइत अछि।
गीत, वाद्य आ नृत्य लेल आवश्यक समए भेल काल आ जइ निश्चित गतिक ई अनुसरण करैत अछि से भेल लय। जखन लय त्वरित अछि तँ भेल द्रुत, जखन आस्ते-आस्ते अछि, तँ भेल विलम्बित आ नै आस्ते अछि आ नै द्रुत तँ भेल मध्य लय।
मात्रा ताल केर युनिट अछि आ ऐसँ लय केँ नापल जाइत अछि।
तालमे मात्रा संयुक्त रूपसँ उपस्थित रहला उत्तर ओकरा विभाग कहल जाइत अछि- जेना दादरामे तीन मात्रा संयुक्त रहला उत्तर २ विभाग।
तालक विभागक निअमबद्ध विन्यास अछि छन्द आ तालक प्रथम विभागक प्रथम मात्रा भेल सम आ एकर चेन्ह भेल + वा x आ जतऽ

बिना तालीक तालकेँ बुझाओल जाइत अछि से भेल खाली आ एकर चेन्ह अछि ० ।

ओ सम्पूर्ण रचना जइसँ तालक बोल इंगित होइत अछि, जेना मात्रा, विभाग, ताली, खाली ई सभटा भेल ठेका।

चेन्ह- तालीक स्थान पर ताल चेन्ह आ संख्या। सम + वा x खाली ०

ऽ अवग्रह/बिकारी

- एक मात्राक दू टा बोल
- एक मात्राक चारिटा बोल

एक मात्राक दूटा बोलकेँ धागे आ चारि टा बोलकेँ धागेतिट सेहो कहल जाइत अछि।

तालक परिचय

ताल कहरबा

४ टा मात्रा, एकटा विभाग, आ पहिल मात्रा पर सम।

धागि नाति नक धिन।

तीन ताल त्रिताल

१६ टा मात्रा, ४-४ मात्राक ४ टा विभाग। १,५ आ १३ पर ताली आ ९ म मात्रापर खाली रहैत अछि।

धा धिं धिं धिं
धा धिं धिं धा
धा तिं तिं ता
ता धिं धिं धा

झपताल

१० मात्रा। ४ विभाग, जे क्रमसँ २, ३, २, ३ मात्राक होइत अछि।

१ मात्रा पर सम, ६ पर खाली, ३, ८ पर ताली रहैत अछि।

धी ना
धी धी ना
ती ना
धी धी ना

ताल रूपक

७ मात्रा। ३, २, २ मात्राक विभाग।

पहिल विभाग खाली, बादक दू टा भरल होइत अछि।
पहिल मात्रापर सम आ खाली, चारिम आ छअमपर ताली होइत अछि।
धी धा त्रक
धी धी
धा त्रक

ह्रस्व-दीर्घ गणना

छन्द दू प्रकारक अछि। मात्रिक आ वार्णिक। वेदमे वार्णिक छन्द अछि। वार्णिक छन्दक परिचय लिअ। ऐमे अक्षर गणना मात्र होइत अछि। हलंतयुक्त अक्षरकेँ नै गानल जाइत अछि। एकार उकार इत्यादि युक्त अक्षरकेँ ओहिना एक गानल जाइत अछि जेना संयुक्ताक्षरकेँ। संगे अ सँ ह केँ सेहो एक गानल जाइत अछि। द्विमानक कोनो अक्षर नै होइछ। मुख्यतः तीनटा बिन्दु मोन राखू-
१. हलंतयुक्त अक्षर-० २. संयुक्त अक्षर-१ ३. अक्षर अ सँ ह -१ प्रत्येक।
आब पहिल उदाहरण देखू :-
ई अरदराक मेघ नहि मानत रहत बरसि के=१+५+२+२+३+३+३+१=२० मात्रा
आब दोसर उदाहरण देखू ; पश्चात्=२ मात्रा; आब तेसर उदाहरण देखू आब=२ मात्रा; आब चारिम उदाहरण देखू स्क्रिप्ट=२ मात्रा
छन्दोबद्ध रचना पद्य कहबैत अछि- अन्यथा ओ गद्य थीक। छन्द माने भेल एहन रचना जे आनन्द प्रदान करए। मुदा ऐसँ ई नै बुझबाक चाही जे आजुक नव कविता गद्य कोटिक अछि कारण वेदक सावित्री-गायत्री मंत्र सेहो शिथिल/ उदार निअमक कारण, सावित्री मंत्र गायत्री छंद मे परिगणित होइत अछि- जेना यदि अक्षर पूरा नै भेल तँ एक आकि दू अक्षर प्रत्येक पादमे बढ़ा लेल जाइत अछि। य आ व केर संयुक्ताक्षरकेँ क्रमशः इ आ उ लगा कऽ अलग कएल जाइत अछि। जेना- वरेण्यम्=वरेणियम्
स्वः= सुवः।
तमिल छोड़ि शेष सभटा दक्षिण आ समस्त उत्तर-पश्चिमी आ पूर्वी भारतीय लिपि आ देवनागरी लिपिमे वएह स्वर आ *कचटतप* व्यञ्जन

विधान अछि, जइमे जे लिखल जाइत अछि सएह बाजल जाइत अछि। मुदा देवनागरीमे ह्रस्व “इ” एकर अपवाद अछि, ई लिखल जाइत अछि पहिने मुदा बाजल जाइत अछि बादमे। मुदा मैथिलीमे ई अपवाद सेहो नै अछि- यथा 'अछि' ई बाजल जाइत अछि अ, ह्रस्व 'इ', छ वा *अ इ छ*। दोसर उदाहरण लिअ- राति- रा इ त। एकटा आर उदाहरण लिअ। सन्धि संस्कृतक विशेषता अछि मुदा की इंग्लिशमे संधि नै अछि? तँ ई की अछि - आइम गोइङ टूवार्ड्सदएन्ड। एकरा लिखल जाइत अछि- आइ एम गोइङ टूवार्ड्स द एन्ड। मुदा पाणिनि ध्वनि विज्ञानक आधारपर संधिक निअम बनओलन्हि मुदा इंग्लिशमे लिखबा कालमे तँ संधिक पालन नै होइत छै -आइ एम केँ ओना *आइम* फोनेटिकली लिखल जाइत अछि- मुदा बजबा काल एकर प्रयोग होइत अछि। मैथिलीमे सेहो यथासंभव विभक्ति शब्दसँ सटा कऽ लिखल आ बाजल जाइत अछि।

छन्द दू प्रकारक अछि। मात्रा छन्द आ वर्ण छन्द।

वेदमे वर्णवृत्तक प्रयोग अछि।

मुख्य वैदिक छन्द सात अछि-

गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पङ्क्ति, त्रिष्टुप् आ जगती; शेष ओकर भेद अछि, अतिछन्द आ विच्छन्द। एतऽ छन्दकेँ अक्षरसँ चिन्हल जाइत अछि। जे अक्षर पूरा नै भेल तँ एक आकि दू अक्षर प्रत्येक पादमे बढ़ा लेल जाइत अछि। *य* आ *व* केर संयुक्ताक्षरकेँ क्रमशः इ आ उ लगा कऽ अलग कएल जाइत अछि। जेना-

वरेण्यम्= वरेणियम्

स्वः= सुवः

गुण आ वृद्धिकेँ अलग कऽ सेहो अक्षर पूर कऽ सकै छी।

ए = अ + इ , ओ = अ + उ , ऐ = अ/आ + ए, औ = अ/आ + ओ

छन्दः शास्त्रमे प्रयुक्त ‘गुरु’ आ ‘लघु’ छंदक परिचय प्राप्त करू।

तेरह टा स्वर वर्णमे अ, इ, उ, ऋ, लृ ; ई पाँच ह्रस्व आ आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ ; ई आठ दीर्घ स्वर अछि।

ई स्वर वर्ण जखन व्यंजन वर्णक संग जुड़ि जाइत अछि तँ ओकरासँ ‘गुणिताक्षर’ बनैत अछि।

क्+अ= क,

क्+आ=का ।
एक स्वर मात्रा आकि एक गुणिताक्षरकेँ एक ‘अक्षर’ कहल जाइत अछि। कोनो व्यंजन मात्रकेँ अक्षर नै मानल जाइत अछि- जेना ‘अवाक्’ शब्दमे दू टा अक्षर अछि; अ, वा ।
" *ऐमे एकटा अपवाद अछि ।"म्ह" आ "न्ह" केँ संग एहन नियम नै लगैत अछि ।" !!!* मैथिली लेल ई निअम नै छै (हिन्दीमे ई निअम छै, आ किछु मैथिली लेखक ओकर अनुकरण कऽ ई लिखनहियो छथि), एतऽ म्ह आ न्ह केर पहिलुका ह्रस्व सेहो सामान्य रूपसँ दीर्घ होइत अछि। जेना छनि आ छन्हि कोनो बच्चासँ बजबा कऽ देखू- छनि मे छ ह्रस्व, मुदा छन्हि मे छ दीर्घ उच्चारित होइए। तहिना जिम्हर मे जि दीर्घ उच्चरित होइए (पद्यमे)। ओना कोनो लेखक जँ एकाध ठाम ओकरा ह्रस्व लऽ रहल छथि तँ ओ पद्यक पाँति अपवाद रूपमे स्वीकृत भऽ सकैए; मुदा निअममे ऐ अपवादक हिन्दीक अनुकरणमे स्वीकृत करबाक आवश्यकता नै। तहिना जिनका मैथिली गायनक अनुभव छन्हि से आर नीक जकाँ बुझि सकैत छथि जे पद्य पहिने पढ़ल आ फेर गाओल जाइ छै, तेँ "हमर स्वर" गेबा काल "हमर" केर "र" दीर्घ हएत, बावजूद ओकर दोसर शब्दक भाग रहलाक बादो- कारण ओकर निर्धारण पद्यक पाँतिक अनुसार लगातार हएत। हँ जँ पद्यक दोसर पाँतिक पहिल अक्षर संयुक्ताक्षर अछि आ पछिला पाँतिक अन्तिम अक्षर ह्रस्व तँ ओ ह्रस्व दीर्घ नै हएत; कारण पाँतिक अन्तक संग गणनाक अन्त भऽ जाइत अछि।
दीर्घ आ बिकारी (संस्कृतमे अवग्रह, बांग्लामे जफला) मे अन्तर छै। बिकारी ऽ जँ चारियोटा दऽ दियौ तैयो दीर्घ नै हएत.. जेना बच्चाक गीतमे घऽऽऽऽऽऽर- ई ह्रस्व-ह्रस्व भेल। पदक अन्तिम अक्षरकेँ आवश्यकतानुसार ह्रस्वकेँ दीर्घ आ दीर्घकेँ ह्रस्व कएल जा सकैत अछि।
कोनो गजलक पाँती (मिसरा)क वज्न/ वा शब्दक वज्न तीन तरहेँ निकालि सकै छी, सरल वार्णिक छन्दमे वर्ण गानि कऽ; वार्णिक छन्दमे वर्णक संग ह्रस्व-दीर्घ (मात्रा) क क्रम देखि कऽ; आ मात्रिक छन्दमे ह्रस्व-दीर्घ (मात्रा) क क्रम देखि कऽ। जिनका गायनक कनिकबो ज्ञान छन्हि ओ बुझि सकै छथि जे गजलक एक पाँतीमे शब्दक संख्या दोसर पाँतीक

संख्यासँ असमान रहि सकैए, मुदा जँ ऊपर तीन तरहमे सँ कोनो तरहेँ गणना कएल जाए तँ वज्न समान हएत। मुदा आजाद गजल *बे-बहर* होइत अछि तेँ ओतऽ सभ पाँती वा शब्दमे वज्न समान हेबाक तँ प्रश्ने नै अछि। ऐ तीनू विधिसँ लिखल गजलमे मिसरामे समान वज्न एबे टा करत। ओना ई गजलकार आ गायक दुनूक सामर्थ्यपर निर्भर करैत अछि; गजलकार लेल वार्णिक छन्द सभसँ कठिन, मात्रिक ओइसँ हल्लुक आ सरल वार्णिक सभसँ हल्लुक अछि, मुदा गायक लेल वार्णिक छन्द सभसँ हल्लुक, मात्रिक ओइसँ कठिन, सरल वार्णिक ओहूसँ कठिन आ आजाद गजल (बिनु बहरक) सभसँ कठिन अछि।

१. सभटा ह्रस्व स्वर आ ह्रस्व युक्त गुणिताक्षर 'लघु' मानल जाइत अछि। एकरा ऊपर U लिखि एकर संकेत देल जाइत अछि।

२. सभटा दीर्घ स्वर आर दीर्घ स्वर युक्त गुणिताक्षर 'गुरु' मानल जाइत अछि, आ एकर संकेत अछि, ऊपरमे एकटा छोट -।

३. अनुस्वार किंवा विसर्गयुक्त सभ अक्षर गुरू मानल जाइत अछि।

४. कोनो अक्षरक बाद संयुक्ताक्षर किंवा व्यंजन मात्र रहलासँ ओइ अक्षरकेँ गुरु मानल जाइत अछि। जेना- अच्, सत्य। ऐ मे *अ* आ *स* दुनू गुरु अछि।

५. जेना वार्णिक छन्द/ वृत्त वेदमे व्यवहार कएल गेल अछि तहिना स्वरक पूर्ण रूपसँ विचार सेहो ओइ युग सँ भेटैत अछि। स्थूल रीतिसँ ई विभक्त अछि:- १. उदात्त २. उदात्ततर ३. अनुदात्त ४. अनुदात्ततर ५. स्वरित ६. अनुदात्तानुरक्तस्वरित, ७. प्रचय (एकटा श्रुति-अनहत नाद जे बिना कोनो चीजक उत्पन्न होइत अछि, शेष सभटा अछि आहत नाद जे कोनो वस्तुसँ टकरओलापर उत्पन्न होइत अछि)।

१. उदात्त- जे अकारादि स्वर कण्ठादि स्थानमे ऊर्ध्व भागमे बाजल जाइत अछि। एकरा लेल कोनो चेन्ह नै अछि।

२. उदातात्तर- कण्ठादि अति ऊर्ध्व स्थानसँ बाजल जाइत अछि।

३. अनुदात्त- जे कण्ठादि स्थानमे अधोभागमे उच्चारित होइछ।नीचाँमे तीर्यक चेन्ह खचित कएल जाइछ।

४. अनुदातात्ततर- कण्ठादिसँ अत्यंत नीचाँ बाजल जाइत अछि।

५. स्वरित- जइमे अनुदात्त रहैत अछि किछु भाग, आ किछु रहैत अछि

उदात्त। ऊपरमे ठाढ़ रेखा खेंचल जाइत अछि, ऐमे।
६. अनुदाक्तानुरक्तस्वरित- जइमे उदात्त, स्वरित किंवा दुनू बादमे होइछ, ई तीन प्रकारक होइछ।
७. प्रचय- स्वरितक बादक अनुदात्त रहलासँ अनाहत नाद प्रचयक, तानक उत्पत्ति होइत अछि।
१. पूर्वार्चिकमे क्रमसँ अग्नि, इन्द्र आ सोम पयमानकेँ संबोधित गीत अछि। तदुपरान्त आरण्यक काण्ड आ महानाम्नी आर्चिक अछि। आग्नेय, ऐन्द्र आ पायमान पर्वकेँ ग्रामगेयगण आ पूर्वार्चिकक शेष भागकेँ आरण्यकगण सेहो कहल जाइछ। सम्मिलित रूपेँ एकरा प्रकृतिगण कहैत छी।
२.उत्तरार्चिक: विकृति आ उत्तरगण सेहो कहैत छी। ग्रामगेयगण आ आरण्यकगणसँ मंत्र चुनि कऽ क्रमशः उहगण आ ऊह्यगण कहबैछ- तदन्तर प्रत्येक गण दशरात्र, संवत्सर, एकह, अहिन, प्रायश्चित आ क्षुद्र पर्वमे बाँटल जाइछ। पूर्वार्चिक मंत्रक लयकेँ स्मरण कऽ उत्तरार्चिक केर द्विक, त्रिक, आ चतुष्टक आदि (२,३, आ ४ मंत्रक समूह) मे ऐ लय सभक प्रयोग होइछ। अधिकांश त्रिक आदि प्रथम मंत्र पूर्वार्चिक होइत अछि, जकर लयपर पूरा सूक्त (त्रिक आदि) गाओल जाइछ।
उत्तरार्चिक उहागण आ उह्यगण प्रत्येक लयकेँ तीन बेर तीन प्रकारेँ पढ़ैछ। वैदिक कर्मकाण्डमे प्रस्ताव प्रस्तोतर द्वारा, उद्गीत उदगातर द्वारा, प्रतिघार प्रतिहातर द्वारा, उपद्रव पुनः उदगातृ द्वारा आ निधान तीनू द्वारा मिलि कऽ गाओल जाइछ। प्रस्तावक पहिने हिंकार (हिं, हुं, हं) तीनू द्वारा आ ॐ उदगातृ द्वारा उदगीतक पहिने गाओल जाइछ। ई पाँच भक्ति भेल।
हाथक मुद्रा- १.१.औँठा(प्रथम आँगुर)-एक यव दूरी पर २.२. औँठा प्रथम आँगुरकेँ छुबैत ३.३. औँठा बीच आँगुरकेँ छुबैत ४.४. औँठा चारिम आँगुरकेँ छुबैत ५.५. औँठा पाँचम आँगुरकेँ छुबैत ६.११. छठम क्रुष्ट औँठा प्रथम आँगुरसँ दू यव दूरी पर ७.६. सातम अतिश्वर सामवेद ८.७. अभिगीत ऋग्वेद।
ग्रामगेयगान- ग्राम आ सार्वजनिक स्थलपर गाओल जाइत छल।
आरण्यक गेयगान- वन आ पवित्र स्थानमे गाओल जाइत छल।

ऊहगान- सोमयाग एवं विशेष धार्मिक अवसर पर। पूर्वार्चिकसँ संबंधित ग्रामगेयगान ऐ विधिसँ। ऊह्यगान आकि रहस्यगान- वन आ पवित्र स्थानपर गाओल जाइत अछि। पूर्वार्चिकक आरण्यक गानसँ संबंध। नारदीय शिक्षामे सामगानक संबंधमे निर्देश:- १.स्वर-७ ग्राम-३ मूर्छना-२१ तान-४९
सात टा स्वर सा, रे, ग, म, प, ध ,नि, आ तीन टा ग्राम- मध्य, मन्द, तीव्र। ७*३=२१ मूर्छना। सात स्वरक परस्पर मिश्रण ७*७=४९ तान।
ऋगवेदक प्रत्येक मंत्र गौतमक २ सामगान (पर्कक) आ काश्यपक १ सामगान (पर्कक) कारण तीन मंत्रक बराबर भऽ जाइत अछि। मैकडॉवेल इन्द्राग्नि, मित्रावरुणौ, इन्द्राविष्णु, अग्निषोमौ ऐ सभकेँ युगलदेवता मानलन्हि अछि। मुदा युगलदेव अछि –विशेषण-विपर्यय।
वेदपाठ-
१. संहिता पाठ अछि शुद्ध रूपमे पाठ।
अ॒ग्निमी॑ळे पु॒रोहि॑तं य॒ज्ञस्य॑दे॒वम्त्विज॑म।होता॑रंरत्न॒ धातमम्।
२. पद पाठ- ऐमे प्रत्येक पदकें पृथक कऽ पढ़ल जाइत अछि।
३. क्रमपाठ- एतऽ एकक बाद दोसर, फेर दोसर तखन तेसर, फेर तेसर तखन चतुर्थ। एना कऽ पाठ कएल जाइत अछि।
४. जटापाठ- ऐमे जँ तीन टा पद क, ख, आ ग अछि तखन पढ़बाक क्रम ऐ रूपमे हएत। कख, खक, कख, खग, गख, खग। ५. घनपाठ- ऐ मे उपरका उदाहरणक अनुसार निम्न रूप हएत- कख, खक, कखग, गखक, कखग। ६. माला, ७. शिखा, ८. रेखा, ९. ध्वज, १०. दण्ड, ११. रथ। अंतिम आठकेँ अष्टविकृति कहल जाइत अछि।
साम विकार सेहो ६ टा अछि, जे गानकेँ ध्यानमे रखैत घटाओल, बढ़ाओल जा सकैत अछि। १. विकार-अग्नेकेँ ओग्नाय। २. विश्लेषण-शब्द/पदकेँ तोड़नाइ ३. विकर्षण-स्वरकेँ खिंचनाइ/अधिक मात्राक बराबर बजेनाइ। ४. अभ्यास- बेर-बेर बजनाइ।५. विराम- शब्दकेँ तोड़ि कऽ पदक मध्यमे 'यति'। ६. स्तोभ- आलाप योग्य पदकेँ जोड़ि लेब। कौथुमीय शाखा 'हाउ' 'राइ' जोड़ैत छथि। राणानीय शाखा 'हावु', 'रायि' जोड़ैत छथि।
मात्रिक छन्दक प्रयोग वेदमे नै अछि वरन् वर्णवृत्तक प्रयोग अछि आ

गणना पाद वा चरणक अनुसार होइत छल। मुख्य छन्द गायत्री, एकर प्रयोग वेदमे सभसँ बेशी अछि। तकर बाद त्रिष्टुप आ जगतीक प्रयोग अछि।

१. गायत्री- ८-८ केर तीन पाद। दोसर पादक बाद विराम। वा एक पदमे छह टा अक्षर।

२. त्रिष्टुप- ११-११ केर ४ पाद।

३. जगती- १२-१२ केर ४ पाद।

४. उष्णिक- ८-८ केर दू तकर बाद १२ वर्ण-संख्याक पाद।

५. अनुष्टुप- ८-८ केर चारि पाद। एकर प्रयोग वेदक अपेक्षा संस्कृत साहित्यमे बेशी अछि।

६. बृहती- ८-८ केर दू आ तकरा बाद १२ आ ८ मात्राक दू पाद।

७. पंक्ति- ८-८ केर पाँच। प्रथम दू पदक बाद विराम अबैछ।

यदि अक्षर पूरा नै होइत अछि, तँ एक वा दू अक्षर निम्न प्रकारेँ घटा-बढ़ा लेल जाइत अछि।

(अ) वरेण्यम् केँ वरेणियम् स्वः केँ सुवः।

(आ) गुण आ वृद्धि सन्धिकेँ अलग कऽ लेल जाइत अछि।

ए= अ + इ

ओ= अ + उ

ऐ= अ/आ + ए

औ= अ/आ + ओ

अहू प्रकारेँ नै पुरलापर अन्य विराडादि नामसँ एकर नामकरण होइत अछि।

यथा- गायत्री (२४)- विराट् (२२), निचृत् (२३), शुद्धा (२४), भुरिक् (२५), स्वराट्(२६)।

ॐ भूर्भुवस्वः। तत् सवितुर्वरेण्यं। भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

वैदिक ऋषि स्वयंकेँ आ देवताकेँ सेहो कवि कहैत छथि। सम्पूर्ण वैदिक साहित्य ऐ कवि चेतनाक वाङ्मय मूर्त्ति अछि। ओतऽ आध्यात्म चेतना, अधिदैवत्वमे उत्तीर्ण भेल अछि, एवम् ओकरा आधिभौतिक भाषामे रूप

देल गेल अछि। ओना ओइ समएमे सेहो सम्मिलित रूपेँ ऋचा पाठ करैबलाकेँ बेङ सन टर्र-टर्र करैबला (अथर्ववेदमे) कहल गेल छै, माने गायनमे असहमतिक स्वरक स्वीकृति छलै।

देवनागरीक अतिरिक्त समस्त उत्तर भारतीय भाषा नेपाल आ दक्षिणमे (तमिलकेँ छोड़ि) सभ भाषा वर्णमालाक रूपमे स्वर आ कचटतप आ य, र ल व, श, स, ह केर वर्णमालाक उपयोग करैत अछि। ग्वाङ केर हेतु संस्कृतमे दोसर वर्ण छैक (छान्दोग्य परम्परामे एकर उच्चारण नै होइत अछि मुदा वाजसनेयी परम्परामे खूब होइत अछि- जेना छान्दोग्य उच्चारण सभूमि तँ वाजसनेयी उच्चारण सभूमीग्वंङ), ई ह्रस्व दीर्घ दुनू होइत अछि। सिद्धिरस्तु लेल सेहो कमसँ कम छह प्रकारक वर्ण मिथिलाक्षरमे प्रयुक्त होइत अछि। वैदिक संस्कृतमे उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित (क्रमशः कं कु कं) उपयोग तँ मराठीमे ळ आ अर्द्ध ऱ् केर सेहो प्रयोग होइत अछि। मैथिलीमे ऽ (बिकारी वा अवग्रह) केर प्रयोग संस्कृत जकाँ होइत अछि आ आइ काल्हि एकर बदलामे टाइपक सुविधानुसारे द’ (दऽ केर बदलामे) एहन प्रयोग सेहो होइत अछि मुदा ई प्रयोग ओइ फाँटमे एकटा तकनीकी न्यूनताक परिचायक अछि। मुदा “आ”कार क बाद बिकारीक आवश्यकता नै अछि।

जेना फारसीमे *अलिफ बे से* आ रोमनमे *ए बी सी* होइत अछि तहिना मोटा-मोटी सभ भारतीय भाषामे लिपिक भिन्नताक अछैत वर्णमालाक स्वरूप एके रङ अछि।

वर्णमालामे दू प्रकारक वर्ण अछि- स्वर आ व्यंजन। वर्णक संख्या अछि ६४ जइमे २२ टा स्वर आ ४२ टा व्यञ्जन अछि।

पहिने स्वरक वर्णन दै छी- जइ वर्णक उच्चारणमे दोसर वर्णक उच्चारणक अपेक्षा नै रहैत अछि, से भेल स्वर।

स्वरक तीन टा भेद अछि- ह्रस्व, दीर्घ आ प्लुत। जइमे बाजैमे एक मात्राक समए लागए से भेल ह्रस्व, जइमे दू मात्रा समए लागल से भेल दीर्घ आ जइमे तीन मात्राक समए लागल से भेल प्लुत।

मूलभूत स्वर अछि- अ इ उ ऋ लृ

पाणिनिसँ पूर्वक आचार्य एकरा समानाक्षर कहै छला।

दीर्घ मिश्र स्वर अछि- ए ऐ ओ औ

पाणिनिसँ पूर्वक आचार्य एकरा सन्ध्यक्षर कहै छला।
लृ दीर्घ नै होइत अछि आ सन्ध्यक्षर ह्रस्व नै होइत अछि।
अ इ उ ऋ ऐ सभक ह्रस्व, दीर्घ (आ ई ऊ ॠ) आ प्लुत (आ३ ई३ ऊ३ ॠ३) सभ मिला कऽ १२ वर्ण भेल। लृ केर ह्रस्व आ प्लुत दू भेद अछि (लृ३) तँ २ टा ई भेल। ए ऐ ओ औ ई चारू दीर्घ मिश्रित स्वर अछि आ ऐ चारूक प्लुत रूप सेहो (ए३ ऐ३ ओ३ औ३) होइत अछि, तँ ८ टा ई सेहो भेल। भऽ गेल सभटा मिला कऽ २२ टा स्वर।
ऐ सभटा २२ स्वरक वैदिक रूप तीन तरहक होइत अछि, उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित।
ऊँच भाग जेना तालुसँ उत्पन्न अकारादि वर्ण उदात्त गुणक होइत अछि आ तेँ उदात्त कहल जाइत अछि। नीचाँ भागसँ उत्पन्न स्वर अनुदात्त आ जइ अकारादि स्वरक प्रथम भागक उच्चारण उदात्त आ दोसर भागक उच्चारण अनुदात्त रूपेँ होइत अछि से भेल स्वरित।
स्वरक दू प्रकार आर अछि, सानुनासिक जेना अँ आ निरनुनासिक जेना अ।
दत्तेन निर्वृत्तः कूपो दात्तः। दत्त नाम्ना पुरुष द्वारा विपाट्- ब्यास धारक उतरबरिया तट पर बनबाओल, एतऽ इनार भेल दात्त। अञ प्रत्यान्त भेलासँ 'दात्त' आद्युदात्त भेल, अण् प्रत्यायान्त होइत तँ प्रत्यय स्वरसँ अन्तोदात्त होइत। रूपमे भेद नै भेलोपर स्वरमे भेद अछि। ऐसँ सिद्ध भेल जे सामान्य कृषक वर्ग सेहो शब्दक सस्वर उच्चारण करै छला।
स्वरितकेँ दोसरो रूपमे बुझि सकै छी- जेना ऐमे अन्तिम स्वरक तीव्र स्वरमे पुनरुच्चारण होइत अछि।
आब व्यञ्जनपर आउ।
व्यञ्जन ४२ टा अछि।
क् ख् ग् घ् ङ्
च् छ् ज् झ् ञ्
ट् ठ् ड् ढ् ण्
त् थ् द् ध् न्
प् फ् ब् भ् म्

य् र् ल् व्
श् ष् स्
ह्
य् व् ल् सानुनासिक सेहो होइत अछि, यँ वँ लँ आ निरुनासिक सेहो।
एकर अतिरिक्त दू टा आर व्यञ्जन अछि- अनुस्वार आ विसर्जनीय वा विसर्ग।
ई दुनूटा स्वरक अनन्तर प्रयुक्त होइत अछि।
विसर्जनीय मूल वर्ण नै अछि, वरन् स् वा र् केर विकार थीक। विसर्जनीय किछु ध्वनि भेद आ किछु रूप-भेदसँ दू प्रकारक अछि- जिह्वामूलीय आ उपध्मानीय। जिह्वामूलीय मात्र क आ ख सँ पूर्व प्रयुक्त होइत अछि, दोसर मात्र प आ फ सँ पूर्व।
अनुस्वार, विसर्जनीय, जिह्वामूलीय आ उपध्मानीयकेँ अयोगवाह कहल जाइत अछि।
उपरोक्त वर्ण सभकेँ छोड़ि ४ टा आर वर्ण अछि, जकरा यम कहल गेल अछि।
कुँ खुँ गुँ घुँ (यथा- पलिक् क्नी, चख ख्नुतः, अग् ग्निः, घ् घ्नन्ति)
पञ्चम वर्ण आगाँ रहलापर पूर्व वर्ण सदृश जे वर्ण बीचमे उच्चारित होइत अछि से यम भेल।
यम सेहो अयोगवाह होइत अछि।
अ आ कवर्ग ह (असंयुक्त) आ विसर्जनीय केर उच्चारण कण्ठमे होइत अछि।
इ ई चवर्ग य श केर उच्चारण तालुमे होइत अछि।
ऋ ॠ टवर्ग र ष केर उच्चारण मूर्धामे होइत अछि।
ऌ तवर्ग ल स केर उच्चारण दाँतसँ होइत अछि।
उ ऊ पवर्ग आ उपध्मानीय केर उच्चारण ओष्ठसँ होइत अछि।
व केर उच्चारण उपरका दाँतसँ अधर ओष्ठ केर सहायतासँ होइत अछि।
ए ऐ केर उच्चारण कण्ठ आ तालुसँ होइत अछि।
ओ औ केर उच्चारण कण्ठ आ ओष्ठसँ होइत अछि।
य र ल व अन्य व्यञ्जन जकाँ उच्चारणमे जिह्वाक अग्रादि भाग ताल्वादि स्थानकेँ पूर्णतया स्पर्श नै करैत अछि। श् ष् स् ह् जकाँ ऐमे तालु आदि

स्थानसँ घर्षण सेहो नै होइत अछि।
क सँ म धरि स्पर्श (वा स्फोटक कारण जिह्वाक अग्र द्वारा वायु प्रवाह रोकि कऽ छोड़ल जाइत अछि) वर्ण र सँ व अन्तःस्थ आ ष सँ ह घर्षक वर्ण भेल।
सभ वर्गक पाँचम वर्ण अनुनासिक कहबैत अछि कारण आन स्थान समान रहितो एकर सभक नासिकामे सेहो उच्चारण होइत अछि- उच्चारणमे वायु, नासिका आ मुँह बाटे बहार होइत अछि।
अनुस्वार आ यम केर उच्चारण मात्र नासिकामे होइत अछि- आ ई सभ नासिक्य कहबैत अछि- कारण ऐ सभमे मुखद्वार बन्द रहैत अछि आ नासिकासँ वायु बहार होइत अछि। अनुस्वारक स्थान पर न् वा म् केर उच्चारण नै हेबाक चाही।
जखन हमरा सभकेँ गप करबाक इच्छा होइत अछि, तखन संकल्पसँ जठराग्नि प्रेरित होइत अछि। नाभि लगक वायु वेगसँ उठैत मूर्धा धरि पहुँचि, जिह्वाक अग्रादि भाग द्वारा निरोध भेलाक अनन्तर मुखक तालु आदि भागसँ घर्षित होइत अछि आ तखन वर्णक उत्पत्ति होइत अछि। कम्पन भेलासँ वायु नादवान आ यएह गूँजित होइत पहुँचैत अछि मुँहमे आ ओकरा कहल जाइत अछि घोषवान, नादरहित भऽ पहुँचैत अछि श्वासमे आ ओकरा कहल जाइत अछि अघोषवान्।
श्वास प्रकृतिक वर्ण भेल “अघोष” , आ नाद प्रकृतिक भेल “घोषवान्”। जइ वर्णक उत्पत्तिमे प्राणवायुक अल्पता होइत अछि से अछि “अल्पप्राण” आ जकर उत्पत्तिमे प्राणवायुक बहुलता होइत अछि, से भेल “महाप्राण”।
कचटतप केर पहिल, तेसर आ पाँचम वर्ण भेल अल्पप्राण आ दोसर आ चारिम वर्ण भेल महाप्राण। संगे कचटतप केर पहिल आ दोसर भेल अघोष आ तेसर, चारिम आ पाँचम भेल घोषवान्। य र ल व भेल अल्पप्राण घोष। श ष स भेल महाप्राण अघोष आ ह भेल महाप्राण घोष। स्वर होइछ अल्पप्राण, उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित।
तँ आब लिखू मैथिली गजल। कविता, अकविता, गद्य-कविता, पद्य सभ लेल तर्क उपलब्ध अछि। से मैथिली गजल सेहो अनिवार्य रूपमे बहर

(छन्द) मे सरल-वार्णिक, वार्णिक आ मात्रिक छन्दमे कहल जेबाक चाही। जेना सोरठा, चौपाइ छै तहिना गजल छै। उर्दूमे *बे-बहर* आजाद गजलक नामसँ प्रयास भेलै। कहबाक आवश्यकता नै जे ओ नै चललै। ५३९ ई.सँ अरबीमे बहर युक्त गजल आइ धरि लिखल जा रहल छै, फारसी आ उर्दूमे सेहो बिना बहरक गजल नै होइ छै। गजलमे भगवान धरिक मजाक उड़ाओल जाइ छै, ओइ अर्थमे ओ उदार छै मुदा बहरक मामिलामे ओ बड्ड कट्टर छै, आ ई कट्टरता ने अरबीमे गजलकेँ कम केलकै आ ने उर्दू-फारसीमे, मात्रा मिलान आ सहज प्रवाह गजलमे एकटा रीतियेँ होइ छै, आ से ओकर विशेषता छिऐ, नै तँ फेर ई नज्म भऽ जेतै।

मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

२.१. उच्चारण निर्देश: (*बोल्ड कएल रूप ग्राह्य):-*

दन्त न क उच्चारणमे दाँतमे जीह सटत- जेना बाजू नाम, मुदा ण क उच्चारणमे जीह मूर्धामे सटत (नै सटैए तँ उच्चारण दोष अछि)- जेना बाजू गणेश। तालव्य ***श****मे जीह तालुसँ,* ***ष****मे मूर्धासँ आ दन्त* ***स****मे दाँतसँ सटत। निशाँ, सभ आ शोषण बाजि कऽ देखू। मैथिलीमे* ***ष*** *केँ वैदिक संस्कृत जकाँ* ***ख*** *सेहो उच्चरित कएल जाइत अछि, जेना वर्षा, दोष। य अनेको स्थानपर ज जकाँ उच्चरित होइत अछि आ ण ड़ जकाँ (यथा संयोग आ गणेश* ***संजोग*** *आ* ***गड़ेस*** *उच्चरित होइत अछि)। मैथिलीमे व क उच्चारण ब, श क उच्चारण स आ य क उच्चारण ज सेहो होइत अछि।*

ओहिना ह्रस्व इ बेशीकाल मैथिलीमे पहिने बाजल जाइत अछि कारण देवनागरीमे आ मिथिलाक्षरमे ह्रस्व इ अक्षरक पहिने लिखलो जाइए आ बाजलो जेबाक चाही। कारण जे हिन्दीमे एकर दोषपूर्ण उच्चारण होइत अछि (लिखल तँ पहिने जाइत अछि मुदा बाजल बादमे जाइत अछि), से शिक्षा पद्धतिक दोषक कारण हम सभ ओकर उच्चारण दोषपूर्ण ढंगसँ कऽ रहल छी।

अछि- अ इ छ ***ऐछ (उच्चारण)***

छथि- छ इ थ – छैथ ***(उच्चारण)***

*पहुँचि- प हुँ इ च **(उच्चारण)***

आब अ आ इ ई ए ऐ ओ औ अं अः ऋ ऐ सभ लेल मात्रा सेहो अछि, मुदा ऐमे ई ऐ ओ औ अं अः ऋ कैँ संयुक्ताक्षर रूपमे गलत रूपमे प्रयुक्त आ उच्चरित कएल जाइत अछि। जेना ऋ कैँ री रूपमे उच्चरित करब। आ देखियौ- ऐ लेल देखिऔ क प्रयोग अनुचित। मुदा देखिऐ लेल देखियै अनुचित। क् सँ ह् धरि अ सम्मिलित भेलासँ क सँ ह बनैत अछि, मुदा उच्चारण काल हलन्त युक्त शब्दक अन्तक उच्चारणक प्रवृत्ति बढ़ल अछि, मुदा हम जखन मनोजमे ज् अन्तमे बजै छी, तखनो पुरनका लोककैँ बजैत सुनबन्हि- मनोजऽ, वास्तवमे ओ अ युक्त ज् = ज बजै छथि।

फेर ज्ञ अछि ज् आ ञ क संयुक्त मुदा गलत उच्चारण होइत अछि- ग्य। ओहिना क्ष अछि क् आ ष क संयुक्त मुदा उच्चारण होइत अछि छ। फेर श् आ र क संयुक्त अछि श्र (जेना श्रमिक) आ स् आ र क संयुक्त अछि स्र (जेना मिस्र)। त्र भेल त्+र ।

*उच्चारणक ऑडियो फाइल विदेह आर्काइव http://www.videha.co.in/ पर उपलब्ध अछि। फेर **कैँ / सँ / पर** पूर्व अक्षरसँ सटा कऽ लिखू मुदा **तँ / कऽ** हटा कऽ। **ऐमे सँ** मे पहिल सटा कऽ लिखू आ बादबला हटा कऽ। अंकक बाद टा लिखू सटा कऽ मुदा अन्य ठाम टा लिखू हटा कऽ– जेना **छहटा** मुदा **सभ टा**। फेर ६अ म सातम लिखू- छठम सातम नै। घरबलामे **बला** मुदा घरवालीमे **वाली** प्रयुक्त करू।*

*रहए- **रहै** मुदा सकैए (उच्चारण सकै-ए)।*

*मुदा कखनो काल रहए आ रहै मे अर्थ भिन्नता सेहो, जेना से कम्मो जगहमे पार्किंग करबाक अभ्यास **रहै** ओकरा। पुछलापर पता लागल जे ढुनढुन नाम्ना ई ड्राइवर कनाट प्लेसक पार्किंगमे काज करैत **रहए**।*

छलै, छलए मे सेहो ऐ तरहक भेल। छलए क उच्चारण छल-ए सेहो।

*संयोगने- (उच्चारण **संजोगने)***

केँ/ कऽ

*केर- **क** (**केर** क प्रयोग गद्यमे नै करू , पद्यमे कऽ सकै छी।)*

*क (जेना रामक) **–रामक** आ संगे (उच्चारण **राम के** / **राम कऽ** सेहो)*

सँ**- सऽ **(उच्चारण)

चन्द्रबिन्दु आ अनुस्वार- अनुस्वारमे कंठ धरिक प्रयोग होइत अछि मुदा चन्द्रबिन्दुमे नै। चन्द्रबिन्दुमे कने एकारक सेहो उच्चारण होइत अछि- जेना रामसँ- (उच्चारण राम सऽ) रामकेँ- (उच्चारण राम कऽ/ राम के सेहो)।

केँ जेना रामकेँ भेल हिन्दीक को (राम को)- राम को= रामकेँ

क जेना रामक भेल हिन्दीक का (राम का) राम का= रामक

कऽ जेना जा कऽ भेल हिन्दीक कर (जा कर) जा कर= जा कऽ

सँ भेल हिन्दीक से (राम से) राम से= रामसँ

सऽ, तऽ , त , केर (गद्यमे) एे चारू शब्द सबहक प्रयोग अवांछित।

के दोसर अर्थेँ प्रयुक्त भऽ सकैए- जेना, के कहलक? विभक्ति "क" क बदला एकर प्रयोग अवांछित।

*नजि, नहि, नै, नइ, नँइ, नइँ, नइं ऐ सभक उच्चारण आ लेखन - **नै***

त्त्व क बदलामे त्व जेना महत्वपूर्ण (महत्त्वपूर्ण नै) जतऽ अर्थ बदलि जाए ओतै मात्र तीन अक्षरक संयुक्ताक्षरक प्रयोग उचित। सम्पति- उच्चारण स म्प इ त (सम्पत्ति नै- कारण सही उच्चारण आसानीसँ सम्भव नै)। मुदा

सर्वोत्तम (सर्वोतम नै)।

राष्ट्रिय (राष्ट्रीय नै) सकैए/ सकै (अर्थ परिवर्तन) ***पोछैले/*** *पोछै लेल/* ***पोछए लेल***

पोछैए/ पोछए/ *(अर्थ परिवर्तन)* ***पोछए/ पोछै*** *ओ लोकनि (हटा कऽ, ओ मे बिकारी नै)*

ओइ*/ ओहि* ***ओहिले****/* ***ओहि लेल/ ओही लऽ जएबैँ/ बैसबैँ पँचभइयाँ***

देखियौक*/ (देखिऔक नै- तहिना अ मे ह्रस्व आ दीर्घक मात्राक प्रयोग अनुचित)*

जकाँ */ जेकाँ तँइ/* ***तैँ/*** *होएत /* ***हएत नजि****/* ***नहि****/ नँइ/ नइँ/ नै*

सौँसे/ सौंसे बड़ */* ***बड़ी*** *(झोराओल) गाए (गाइ नहि), मुदा गाइक दूध (गाएक दूध नै।)*

रहलैँ/ पहिरतैँ हमहीं*/* ***अहीं*** *सब-****सभ सबहक*** *- सभहक*

धरि- *तक* ***गप****- बात* ***बूझब*** *– समझब* ***बुझलौं/ समझलौं/*** *बुझलहुँ – समझलहुँ*

हमरा आर *-* ***हम सभ आकि****- आ कि सकैछ/ करैछ (गद्यमे प्रयोगक आवश्यकता नै)*

होइन*/ होनि* ***जाइन*** *(जानि नै, जेना देल जाइन) मुदा* ***जानि****-बूझि (अर्थ परिव्र्तन)*

पइठ/ जाइठ आउ/ जाउ/ *आऊ/ जाऊ*

मे, कैँ, सँ, पर (शब्दसँ सटा कऽ) तँ कऽ धऽ दऽ (शब्दसँ हटा कऽ) मुदा दूटा वा बेसी विभक्ति संग रहलापर पहिल विभक्ति टाकैँ सटाउ। जेना

ऐमे सँ ।

एकटा, दूटा** (मुदा **कए टा)

*बिकारीक प्रयोग शब्दक अन्तमे, बीचमे अनावश्यक रूपेँ नै। आकारान्त आ अन्तमे अ क बाद बिकारीक प्रयोग नै (जेना **दिअ, आ**/ दिय’ , आ’, आ नै)*

अपोस्ट्रोफीक प्रयोग बिकारीक बदलामे करब अनुचित आ मात्र फॉन्टक तकनीकी न्यूनताक परिचायक)- ओना बिकारीक संस्कृत रूप ऽ अवग्रह कहल जाइत अछि आ वर्तनी आ उच्चारण दुनू ठाम एकर लोप रहैत अछि/ रहि सकैत अछि (उच्चारणमे लोप रहिते अछि)। मुदा अपोस्ट्रोफी सेहो अंग्रेजीमे पसेसिव केसमे होइत अछि आ फ्रेंचमे शब्दमे जतऽ एकर प्रयोग होइत अछि जेना raison d’etre एतऽ सेहो एकर उच्चारण रैजौन डेटर होइत अछि, माने अपोस्ट्रॉफी अवकाश नै दैत अछि वरन जोड़ैत अछि, से एकर प्रयोग बिकारीक बदला देनाइ तकनीकी रूपेँ सेहो अनुचित)।

*अइमे, एहिमे/ **ऐमे जइमे**, जाहिमे एखन/ **अखन/** अइखन **केँ** (के नहि) **मे** (अनुस्वार रहित)*

भऽ मे दऽ तँ (**तऽ, त नै**) सँ (** सऽ स नै**) गाछ तर गाछ लग साँझ खन

*जो (जो go, करै जो do) **तै/तइ** जेना- तै दुआरे/ तइमे/ तइले*

***जै/जइ** जेना- जै कारण/ जइसँ/ जइले*

ऐ/ अइ** जेना- ऐ कारण/ ऐसँ/ **अइले**/ मुदा एकर एकटा खास प्रयोग- लालति कतेक दिनसँ कहैत रहैत **अइ

लै/लइ** जेना लैसँ/ लइले/ लै दुआरे लहँ/ **लौं

गेलौं/ लेलौं/ लेलँह/ *गेलहुँ/ लेलहुँ/ लेलँ* ***जइ****/ जाहि/* ***जै***

जहिठाम/ जाहिठाम/ ***जइठाम/ जैठाम*** *एहि/* ***अहि/***

अइ ***(वाक्यक अंतमे ग्राह्य)*** */* ***ऐ*** *अइछ/* ***अछि/*** *ऐछ*

तइ*/ तहि/* ***तै/*** *ताहि ओहि/* ***ओइ*** *सीखि/* ***सीख*** *जीवि/ जीवी/* ***जीब***

भलेहीं/ ***भलहि तैं/*** *तँइ/* ***तँए जाएब****/ जएब लइ/* ***लै*** *छइ/* ***छै***

नहि/ ***नै****/ नइ गइ/* ***गै छनि****/* ***छन्हि*** *...*

समए *शब्दक संग जखन कोनो विभक्ति जुटै छै तखन समै जना समैपर इत्यादि। असगरमे* ***हृदए*** *आ विभक्ति जुटने हृदे जना हृदेसँ, हृदेमे इत्यादि।*

जइ*/ जाहि/* ***जै*** *जहिठाम/ जाहिठाम/* ***जइठाम****/ जैठाम*

एहि/ अहि/ अइ/ ***ऐ*** *अइछ/* ***अछि****/ ऐछ तइ/ तहि/* ***तै****/ ताहि*

ओहि/ ***ओइ*** *सीखि/* ***सीख*** *जीवि/ जीवी/* ***जीब*** *भले/ भलेहीं/* ***भलहि***

तैं*/ तँइ/* ***तँए जाएब****/ जएब लइ/* ***लै*** *छइ/* ***छै***

नहि/ ***नै****/ नइ गइ/* ***गै छनि*** */* ***छन्हि*** *चुकल अछि* ***/ गेल गछि***

लिखू मैथिली गजल:

५ सँ १० टा शेर मोटामोटी एकटा गजलक निर्माण करत। मुदा कोनो ५-७ टा शेरकेँ एकक बाद दोसर लिख देबै तँ गजल नै बनि जाएत।
ऐमे दू-चारिटा गपपर ध्यान देमऽ पड़त।
जेना वर्ड डोक्युमेन्टमे जस्टीफाइ केलासँ पाँतिक आदि आ अन्तमे एकरूपता आबि जाइ छै तहिना यदि शेरक दुनू पाँती आ गजलक सभ

शेरमे बिनु जस्टीफाइ केने पाँतिक आदि आ अन्तमे एकरूपता रहए तँ कहल जाएत जे ओ एक्के बहरमे अछि आ ऐ तरहक शेरक समुच्चय एकटा गजलक भाग हेबाक अधिकारी हएत। मैथिलीक सन्दर्भमे वार्णिक छन्दक गणना पद्धति माने
हलंतयुक्त अक्षर-० संयुक्त अक्षर-१ अक्षर अ सँ ह -१ प्रत्येक; से उपयोग कएल जाए आ ओइ आधारपर १९ बहरक बदला छोट-मझोला आ पैघ आकारक पाँतिक उपयोग कएल जाए; नामकरणक कोनो आवश्यकता नै। संगे गजलक पहिल शेरक दुनू पाँतीक अन्तमे आ शेष शेरक दोसर पाँतीक अन्तमे एक वा एकसँ बेशी शब्दक समूह दोहराओल जाए **(रदीफ)** सेहो आवश्यक। ओना बिनु रदीफक सेहो गजल कहि सकै छी-एक्के भावपर सेहो गजल कहि सकै छी, बिनु मतलाक आ बिनु मकताक (लोक तँ मकतासँ सेहो गजलक प्रारम्भ करै छथि) सेहो गजल लिख सकै छी-, मुदा ई सभ अपवादे स्वरूप, आ अपवाद तँ अपूर्ण रहिते अछि। मतला एकसँ बेशी सेहो भऽ सकैए। गजलक कोन शेर हुस्न-ए-गजल (सभसँ नीक शेर) अछि तइमे ओइ गजलक विभिन्न समीक्षकक मध्य मतभिन्नता रहि सकैत अछि। फेर काफिया ओना तँ गजलक सभ शेरमे रहै छै (रदीफक पहिने) आ काफिया युक्त शब्द बदलै छै (एकाध बेर पुनः प्रयोग कऽ सकै छी) मुदा ध्यानसँ देखलापर लागत जे तुकमिलानीक दृष्टिएँ ओहूमे शब्दक आरम्भ-मध्य-आखिरीक किछु अक्षर नै बदलै छै। माने लय रहबाके चाही।

आब आउ किछु गजल सुनी:

१

सबसबाइत गप्प छल तकैत हमरापर गुम्हराइत **(२३ वार्णिक मात्रा - रदीफ गुम्हराइत- काफिया युक्त शब्द हमरापर)**

आबैत छलए खौंझाइत आ सेहो ओकरेपर गुम्हराइत **(२३ वार्णिक मात्रा - रदीफ गुम्हराइत- काफिया युक्त शब्द ओकरापर)**

हएत हँसारथि की रहि जाएत चुकड़िऔने ओ मोन मारि **(२३ वार्णिक मात्रा)**

बाजत नै मुँह फुलौने, रहत मुदा मोनपर गुम्हराइत **(२३ वार्णिक मात्रा - रदीफ गुम्हराइत- काफिया युक्त शब्द मोनपर)**

ईह कहलकै जे, मोने-मोन प्रसन्न अछि ओ मारने गबदी **(२३ वार्णिक मात्रा)**
बुझैए सभ हमहीं बुझै छी, नियारे-भासपर गुम्हराइत **(२३ वार्णिक मात्रा - रदीफ गुम्हराइत- काफिया युक्त शब्द नियारे-भासपर)**
माने तोहूँ आ तोहर बापो हमर सार सम्बन्ध फरिछा देबौ **(२३ वार्णिक मात्रा)**
गप्पी छथि ! मुँह घुमेने देखैए कोना मचानपर गुम्हराइत **(२३ वार्णिक मात्रा- रदीफ गुम्हराइत- काफिया युक्त शब्द मचानपर)**

बुझै सभटा छी से नै जे नै बुझै छी मुदा मोना कहैए साइत **(२३ वार्णिक मात्रा)**
बड़बड़ाइए बाइमे, माने अछि ओ स्वयम् पर गुम्हराइत **(२३ वार्णिक मात्रा - रदीफ गुम्हराइत- काफिया युक्त शब्द स्वयम् पर)**
"ऐरावत" बुझैत बुझि गेल छी ई जे सृष्टिक पहिलुके राति **(२३ वार्णिक मात्रा)**
सभ चरित्र रहल देखैत, एक-दोसरापर गुम्हराइत **(२३ वार्णिक मात्रा - रदीफ गुम्हराइत- काफिया युक्त शब्द एक-दोसरापर)**
आब मैथिली गजलक किछु कठिनाह विषएपर आबी।
कठिनाह विषए किछु विविधता आनत आ मैथिलीक परिप्रेक्ष्यमे नूतनता सेहो, मुदा ई ततेक कठिनाह सेहो नै अछि।
वैदिक आ मैथिली छन्दक गणना अक्षरसँ होइत अछि से तँ कहिये गेल छी, गुरु-लघुक विचार ओतऽ नै भेटत। मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ लौकिक संस्कृत आ हिन्दीसँ प्रभावित छथि मुदा गएर मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक शब्दावलीमे ढेर रास शब्द भेटत जे वैदिक संस्कृतमे अछि मुदा लौकिक संस्कृतमे नै, तेँ कम दूषित आ खाँटी मैथिली भाषा हुनके लोकनिक अछि आ तेँ छन्दक गणना अक्षरसँ करबाक आर बेशी आवश्यकता अछि।
गायत्री-२४ अक्षर उष्णिक्- २८ अक्षर अनुष्टुप् – ३२ अक्षर
बृहती- ३६ अक्षर पङ्क्ति- ४० अक्षर त्रिष्टुप्- ४४ अक्षर

जगती- ४८ अक्षर

शूद्र कवि ऐलुष आ आन गोटे द्वारा रचित ऋक् वेद मे गायत्री, त्रिष्टुप् आ जगती छन्द सर्वाधिक परिमाणमे भेटैत अछि, से अही तीनूपर विचारी।
गायत्री: ई चारि प्रकारक होइत अछि- द्विपदी, त्रिपदी, चारि पदी आ पाँचपदी। चारि पदी मे ८-८ अक्षरक पद आ एक पदक बाद अर्द्धविराम आ दू पदक बाद पूर्ण विराम दऽ सकै छी, माने एक गायत्री शेर तैयार। ओना ऐठाम हम स्पष्ट करी जे गायत्री मंत्र नै छंद अछि। लोक जकरा गायत्री मंत्र कहै छै ओ सविता मंत्र छी जे गायत्री छंदमे कहल गेल अछि आ सेहो तखन जखन स्वर्कें सुवः आ वरेण्यम् कें वरेणियम् कहल जाए।
त्रिष्टुप्: चारि पद, ११-११ अक्षरक पद आ एक पदक बाद अर्द्धविराम आ दू पदक बाद पूर्णविराम दऽ सकै छी। माने एक त्रिष्टुप् शेर तैयार।
जगती: चारि पद १२-१२ अक्षरक पद आ एक पदक बाद अर्द्धविराम आ दू पदक बाद पूर्णविराम दऽ सकै छी। माने एक जगती शेर तैयार।
आब जेना पहिने कहल गेल अछि जे गायत्रीमे एक-दू अक्षर कम वा बेशी सेहो भऽ सकैत अछि माने २२ सँ २६ अक्षर धरि, से गायत्रीक प्रकार भेल- विराड् गायत्री- २२, निचृद् गायत्री- २३, भुरिग् गायत्री- २५, आ स्वराड् गायत्री भेल २६ अक्षरक। तँ निअमक अन्तर्गत भेट गेल ने छूट आ स्वतंत्र भऽ गेल ने मैथिली गजल। गजलमे पाँतीक अन्तमे पूर्ण विराम दैयो सकै छी आ छोड़ियो सकै छी।

फारसीक काव्यशास्त्रक हिन्दुत्वीकरणक संबंधमे हमरा नै बुझल अछि आ मौलिक गजल रचनामे कोना हिन्दुत्व आनल जाए सेहो हमरा नै बुझल अछि। काव्यकेँ "हिन्दू" आ "विधर्मी" शब्दावलीसँ दूर राखल जाए सएह नीक, हँ "मैथिली गजल" शब्दक प्रयोगमे हमरा कोनो आपत्ति नै आ तकरा हिन्दुत्वीकरण मानल जाए तँ हमर कोनो दोख नै। जतेक सौँसे विश्वमे मिला कऽ कवि/ काव्यशास्त्री भेल हेता ओइसँ बेशी कवि/ काव्यशास्त्री अरबी-फारसीमे भेल छथि।
मैथिली भाषामे गजल जे हम लिखी तँ छन्दशास्त्रक अनुसार लिखी, आ से छन्दशास्त्र हम अरबी-फारसीक प्रयुक्त करी, मुदा ओइ प्रयासक अतिरिक्त ऋगवैदिक छन्दशास्त्र टगण-मगणसँ बेशी वैज्ञानिक आ सरल

छै आ ऐसँ मैथिली गजल लिखबा-पढ़बा-गुनगुनएबामे लोककेँ सुविधा हेतै से हमर विश्वास अछि। वेदक समएमे हिन्दू शब्दक जन्मो नै भेल रहै से वैदिक छन्दशास्त्रक प्रयोग मात्र, मैथिली गजलकेँ हिन्दू बना देतै से हमरा नै लगैए।
हम "मैथिली हाइकूशास्त्र" लिखने रही तहिया सेहो हमरा लग "वार्णिक" आ "मात्रिक"मे एकटा चयन करबाक छल, आ तहियो हम "वार्णिक" गणना पद्धतिक चयन केलौं। "शिन्टो" धर्मावलम्बी जापानी (किछु बौद्ध सेहो) सभक लिपि आ तकर छन्दशास्त्र जँ प्रयोग करी तँ मैथिलीमे हाइकू कहियो नै लिखल जा सकत; कारण ओकर काव्यशास्त्र, जापानी भाषा आ ओकर कएक तरहक लिपिक सापेक्ष छै आ ओइमे धर्म अबितो छलै (टनका/ वाका- ईश्वरक आह्वाण)। अरबी-फारसी गजल मुदा धर्म निरपेक्ष छै, मुदा ओकर काव्यशास्त्र ओकर अपन भाषा-लिपि लेल छै। से भाषा-निरपेक्ष ने जापानी काव्यशास्त्र भऽ सकै छै आ ने अरबी-फारसी काव्यशास्त्र।

आउ आब गजल कही:

गायत्री गजल
छै सुनि देखि कएल, छै ककरासँ ककर
कोन गपक सहल, छै ककरासँ ककर

हे अछि देखि सहल, अछि की टीस उठल
रे चिन्हलकेँ चीन्हल, छै ककरासँ ककर

ई सभ सत्यक संगी, सभ छै भेष बदलि
के अछि मुँह फेरल, छै ककरासँ ककर

हे बिजुलौका देखियौ, छै उकापतङ्ग जेकाँ

की माथ सुन्न कएल, छै ककरासँ ककर

अगिनवान मैथिली, की सुखि जाएत धार
कहै किदनि कहल, छै ककरासँ ककर

करू कोन समझौता, करू कोन निपटारा
के ललकारि रहल, छै ककरासँ ककर

के अछि उठा रहल, अछि के झुका रहल
के अछि बाजि रहल, छै ककरासँ ककर

ऐरावत छै चकित, अछि की सोचि रहल
ई कर्णधार बँचल, छै ककरासँ ककर

त्रिष्टुप् गजल
अछि चोरबा संग देखू ठाढ़, देखैत रहलि डकलिलामी
नहि होएत आब बरदास्त, डाक- डकौअलि डकलिलामी

ई सुरकि रहल छल आब, नै भेटत आब फेर की खाद्य
अछि कोना भेल ई असम्हार, डघरब चलि डकलिलामी

कोना तड़फड़िया सभ अछि, डगहर थस लेने की बात
नञि निचेन भेल अछि बाप, ओ मुहानी आनि डकलिलामी

औ बुझारति होएत फेरसँ, भेल की ई ढिंढमदरा आब
ई ढाबुस बेंगक अछि ठाढ़, ई ककर चालि डकलिलामी

पुक्की पाड़ि के रहल पुकारि, बहीर बनि भने अछि ठाढ़
नहि ककरो सुनब पुकार, ई हथौड़ा मारि डकलिलामी

कहू यौ किएक छी हूस ठाढ़, ऐरावतक फोंफक अबाज
नहि किए बनल बौक ठाढ़ , चिपैले सुआदि डकलिलामी

जगती गजल
भगवानक बनाओल ई गाम, जखन अछि हो भोर बकटेंट
नहि तँ भेटत की कोनो विराम, अछि भेल कोना भेर बकटेंट

औ की नहि भेटत आबहु त्राण, छी सुनल सएह सरनरिया
कोना मिरदङिया देलक थाप, ई मिरहन्नी शेर बकटेंट

जाए रहल पछताए रहल, नहि बाट कोनो सुझाए रहल
अछि गोलहत्थी खाइत ई छौड़ा, पँचागि ई बिहटार बकटेंट

मोचण्ड बूड़ि रौदमुँहा होइत, साँझक लकधक बैसि रहल
धमधूसर सभ बेर लगौरी, आनि रहल गनौर बकटेंट

गदा रे गुइँ गुइँ मार गदा रे, गदा रे पुइँ पुइँ, मुक्का मारल
गताखोरक छै ई हेँज चलल, गतात संग पथार बकटेंट

बेराम पड़ब नै आउ सकल, बेपर्द करब बेदरंग भेल
ऐरावत चीन्हि बेपारी सभकेँ, करू भाषाक व्यापार बकटेंट
मैथिली आ संस्कृतमे मात्र तुकान्त (अन्तक तुक) लयक निर्माण नै करै छै, मुदा करितो छै।
तुक मिलानीक दृष्टिएँ ओहूमे शब्दक आरम्भ-मध्य-आखिरीक किछु अक्षर नै बदलै छै।
वेद-ए-मुकद्दस मे वेदक विषएमे अली सरदार जाफरी लिखै छथि- *शुऊरे-इन्साँ के आफताबे-अजीम की अव्वलीं शुआएँ-* मनुष्यक चेतनाक पहिल किरिण।

जेना तमिलमे संस्कृत शब्दक आ तुर्कीमे अरबी शब्दक बहिष्कारक आन्दोलन चलल तहिना फारसीमे (फारसक प्राचीन ग्रन्थ अवेस्ता आ वैदिक-संस्कृतक मध्य समानता द्रष्टव्य) सेहो अरबी शब्दक बहिष्कार आ तकरा स्थानपर आर्य भाषा-समूहक शब्दक ग्रहणक आन्दोलन चलल अछि। मैथिलीमे सेहो हिन्दी-उर्दू शब्दक बहुलतासँ प्रयोग भाषाक अस्तित्वपर संकट जकाँ अछि, खास कऽ मिथिलाक्षरक मैथिल ब्राह्मण संप्रदाय द्वारा दाह-संस्कार केलाक बाद।

आब उर्दू गजलपर आबी। १८९३ ई.मे हाली *मुकद्दमा-ए-शेर-ओ-शायरी* लिखलन्हि जे हुनकर काव्य-संग्रहक भूमिका छल। ओइ काल धरि उर्दू गजलक विषय आ रूप दुनू मृतप्राय छल से हाली विषय-परिवर्तनक आह्वान तँ केबे केलन्हि संगे काफिया आ रदीफक सरल स्वरूपक ओकालति केलन्हि। ओ लिखै छथि जे एकाधे टा शेर आइ-काल्हि नीक रहैए आ शेष गजल फारसीक शब्द सभसँ भरि देल गेल शेरक संकलन भऽ जाइए, जइसँ ओकर स्तरहीनतापर लोकक ध्यान नै जाए। से उर्दू गजल धार्मिक कट्टरतापर व्यंग्यक क्षेत्रमे फारसी गजलसँ आगाँ बढ़ि गेल।

संगीत आ गजल गायन

ठाठ कल्याणक अन्तर्गत राग यमनमे त्रिताल १६ मात्रा (दू पाँतिक अनुष्टुप् ३२ अक्षर) क एतऽ प्रयोग भऽ सकैए। ठाठ बिलावलक अन्तर्गत राग बिलावल एकताल १२ मात्राक होइत अछि, एतऽ गायत्री- २४ अक्षरक गजलक प्रयोग भऽ सकैए। कारण वार्णिक गणनाक उपरान्त रेघा कऽ गायककेँ कम गाबए पड़तन्हि आ शब्द/ अक्षरक अकाल नै बुझना जाएत।

ई मात्र उदाहरण अछि आ से गायकक लेल, मैथिली गजल लिखनिहारक लेल नै।

मैथिलीमे अखन धरि जे गजल लिखल गेल अछि ओइमे बहरक एकरूपताक कोनो विचार नै राखल गेल अछि। ने से बहर-विचार फारसी काव्यशास्त्रक हिसाबसँ राखल गेल छै आ ने भारतीय काव्यशास्त्रक हिसाबसँ। आ तइ कारणसँ मैथिली गजल सभकेँ “गजल सन कविता” मात्र कहि सकै छिऐ। ओना बहरक एकरूपता गजलकार लोकनि द्वारा

गजल लिखलाक बाद एक गजलपर आध घण्टा लगेला मात्रसँ कएल जा सकैए।

गजल

सहस्राब्दीक हारि हमर आ जीत ओकर, नै जातिवादीक सोझाँ होएब लरताङर
भेष बदलि जातिपंथी जीति रहल कवि, ऐलुष नै फेर हम बनब लरताङर

एहि भू मार्गक अछि तँ गप्पे विचित्र सन, प्रकाश आएल अछि भेल अन्हार निवृत्त
मयूरपंखी पनिसोखा उगल छै एखने, इन्द्रक मेघकेँ सोंखि करब लरताङर

बनि बाल बुद्धि हम पुछने आइ छलहुँ, ई सत्य अहिंसाक पथ ई विजयक पथ
जीतल जाइए असत्यक रथ हुनकर, टनकाएब नै फेर होएब लरताङर

रस्ता चलैत छलहुँ दिन राति सदिखन, से भेल जाइत छारन नव रस्ता बनल
छी देखि रहल रस्ताक केंचुली भरिगर, गऽ जाइत आगाँ नहि होएब लरताङर

अबैए ओ सत्यक क्षण कोन विपदा बनि, अछि आएल दौगल ओ सुनझाएल अछि
पोखरिक जाइठपर भेल ठाढ़ छी हम, छछड़बाएब घर नै हैब लरताङर

छनगा पीबि शिव देखि रहल चारूकात, विषहन्त ओ घूमि रहल बनल बसात
तांडव ई अहाँक बुद्धि कहैए से त्रिकटु, तगबाए तकरा नै होएब लरताङर

हे भाइ ऐरावत अछि आइ झूमि रहल, कदैमे करैत ओ कदमताल

विकराल
चरखा कत्तिनक टकुआ काटब देखल, नहि कदरियाएब खोभब लरताङर

गजल

बरसातिक ई राति बनल सुखराति हे कालि
करब षोडशोपचार आर दए बलि हे कालि

बाल बसन्त भैया बढ़थु बहिनक अछि आस
आस्तीक करैत भैया लेल सुधियो नहि हे कालि

लाल झिंगुर, लाल सिन्दुर, लाल अड़हुल फूल
ताहूसँ लाल देखल ई दृश्य-देश मिथि हे कालि

स्वप्नक सोझाँ सत्यक नै अछि आब कोनो मोल
पोखड़ि झाँखड़ि सगरि घूमि ई देखलि हे कालि

अमुआ फड़ए लदा लदी डारि लीबि-लीबि जाए
ओकर नम्रतामे कोनो अगुताइ सुनलि हे कालि

ऐरावत गजल सन कविता देखू देलनि ई
मैथिलीक गरिमा एहिठाँ देखू सदति हे कालि

गजल

जाइत-जाइत देखल ओ ठाढ़ आर मेघडम्बर सन छाती
भैयाक पीठ धोबिया पाट हुनकर मेघडम्बर सन छाती

पड़ल फेर अकाल करैत हाक्रोस छथि ओ ठाढ़ भेल कात
छाती धकधक उन्नत्त ठाढ़ि दुआर मेघडम्बर सन छाती

देखल ई चित्कार हम भऽ सोझाँ ठाढ़ देबै ओकरा हुतकारी

संकट प्रहारमे धैर्य अपरम्पार मेघडम्बर सन छाती

देखल हुनका आइ छन्हि मुँह क्लान्त मुदा नहि कोनो बात
कर्तव्यक बिच कोनो विश्राम डगर मेघडम्बर सन छाती

सुनू सुनू भाइ गप भेल असम्हार करू पुकार समधानि
भेल मानवक ई हाल करू दुत्कार मेघडम्बर सन छाती

ऐरावत देखल घुरचालि बनल हथियार ओ लेने जाल
छी तैयो ठाढ़ की हम क्षितिजक पार मेघडम्बर सन छाती

आब किछु शब्दावली देखी।

<u>अरकान :अरकान सामिल पूर्णाक्षर:</u>

अरकान सामिल पूर्णाक्षर: फ–ऊ–लुन U।। फा–इ–लुन।U। मफा–ई–लुन U।।। मुस–तफ–इ–लुन ।।U। फा–इ–ला–तुन ।U।। मु–त–फा–इ–लुन UU।U। मफा–इ–ल–तुन U।UU। मफ–ऊ–ला–तु ।।।U
सभ पूर्णाक्षरी घटक मारते रास प्रकार।
१० पूर्णाक्षरी (सालिम) अराकानसँ १९ बहर आ से दू प्रकारक:
मुफरद बहर माने रुक्नक बेर-बेर प्रयोगसँ।सात सालिम (पूर्णाक्षरी) बहर, संगीत शब्दावलीमे एकरा शुद्ध कहि सकै छी।सभ पाँतीमे २-८ बेर दोहरा कऽ शेरमे ४-१६ रुक्नी बहर बनत।

४ रुक्नक बहर- मुरब्बा ६ रुक्नक बहर- मुसद्दस ८ रुक्नक बहर- मुसम्मन / मुफ़रद (विशुद्ध) आठ–रुक्न, छह रुक्न आ चारि–रुक्नक सालिम बहर
हजज :-आठ–रुक्न म फा ई लुन (U।।।) – चारि बेर/ छः–रुक्न म फा ई लुन (U।।।) – तीन बेर/ चारि–रुक्न म फा ई लुन (U।।।) – दू बेर
रजज़ आठ–रुक्न मुस तफ इ लुन (।।U।) – चारि बेर/ छः–रुक्न मुस तफ इ लुन (।।U।) – तीन बेर/ चारि–रुक्न मुस तफ इ लुन (।।U।) – दू

बेर/
रमल आठ–रुक्न फा इ ला तुन (।U।।) – चारि बेर/ छः–रुक्न फा इ ला तुन (।U।।)– तीन बेर/ चारि–रुक्न फा इ ला तुन (।U।।)– दू बेर
वाफ़िर आठ–रुक्न म फा इ ल तुन (U।UU।) – चारि बेर/ छः–रुक्न म फा इ ल तुन (U।UU।) – तीन बेर/ चारि–रुक्न म फा इ ल तुन (U।UU।)– दू बेर
कामिल आठ–रुक्न मु त फा इ लुन (UU।U।)– चारि बेर/ छः–रुक्न मु त फा इ लुन (UU।U।) – तीन बेर/ चारि–रुक्न मु त फा इ लुन (UU।U।) – दू बेर
मुतकारिब आठ–रुक्न फ ऊ लुन (U।।) – चारि बेर/ छः–रुक्न फ ऊ लुन (U।।) – तीन बेर/ चारि–रुक्न फ ऊ लुन (U।।) – दू बेर
मुतदारिक आठ–रुक्न फा इ लुन (।U।) – चारि बेर/ छः–रुक्न फा इ लुन (।U।) – तीन बेर/ चारि–रुक्न फा इ लुन (।U।) – दू बेर
ऐ सभक मारते रास अपूर्णाक्षरी रूप सेहो।

मुरक्कब बहर: दू प्रकारक अरकानक बेर-बेर एलासँ १२ सालिम बहर, संगीतक भाषामे मिश्रित। तीन तरहक- ४ रुक्नक बहर, ६ रुक्नक बहर, ८ रुक्नक बहर/ मुरक्कब (मिश्रित) पूर्णाक्षरी (सालिम) बहर
१२ टा –तवील, मदीद, मुनसरेह, मुक्तजब, मज़ारे, मुजतस, खफीफ, बसीत, सरीअ, जदीद, करीब, मुशाकिल।

<u>अरकान :मुज़ाहिफ अरकान अपूर्णाक्षर :</u>

मुज़ाहिफ अरकान अपूर्णाक्षर :फ–इ–लुन UU। मफा–इ–लुन U।U। फ–इ–ला–लुन UU।। म–फा–ई–लु U।।U मुफ–त–इ–लुन ।UU। फ–ऊ–लु U।U मफ–ऊ–लु ।।U मफ–ऊ–लुन ।।। फै–लुन ।। फा । फ–अल् U। फ–उ–ल् U।U फा अ । U फा इ लुन । U । फ ऊ लुन U । ।
मुक्तजब (अपूर्णाक्षरी आठ रुक्न): फ ऊ लु U । U फै लुन U । फ ऊ लु U।U फै लुन। ।
मज़ारे (अपूर्णाक्षरी आठ रुक्न):मफ ऊ लु । । U फा इ ला तु । U । U म फा ई लु U । । U फा इ लुन। U । / फा इ ला न। U । U

मुजतस (अपूर्णाक्षरी आठ–रुक्न):म फा इ लुन U । U । फ इ ला तुन U

U । । म फा इ लुन U । U । फै लुन। ।/ फ–इ–लुन UU।
ख़फीफ़ (अपूर्णाक्षरी छः रुक्न):फा इ ला तुन । U । । म फा इ लुन U । U । फै लुन। । / फ इ लुन U U ।

आब एक धक्का फेरसँ मैथिलीक उच्चारण निर्देश आ ह्रस्व-दीर्घ विचारपर आउ।
जेना कहल गेल रहए जे अनुस्वार आ विसर्गयुक्त भेलासँ दीर्घ हएत तहिना आब कहल जा रहल अछि जे चन्द्रबिन्दु आ ह्रस्वक मेल ह्रस्व हएत।
माने चन्द्रबिन्दु+ह्रस्व स्वर= एक मात्रा
संयुक्ताक्षर: एतऽ मात्रा गानल जाएत ऐ तरहेँ:-
क्ति= क् + त् + इ = ०+०+१= १
क्ती= क् + त् + ई = ०+०+२= २

आब पाँती वा पाँति खण्डक अन्तिम वर्णपर आउ।
क्ष= क् + ष= ०+१ त्र= त् + र= ०+१ ज्ञ= ज् + ञ= ०+१
श्र= श् + र= ०+१ स्र= स् +र= ०+१ शृ =श् +ऋ= ०+१
त्व= त् +व= ०+१ त्त्व= त् + त् + व= ० + ० + १
ह्रस्व + ऽ = १ + ०
अ वा दीर्घक बाद बिकारीक प्रयोग नै होइत अछि जेना *दिअऽ आऽ ओऽ* (दोषपूर्ण प्रयोग)। हँ व्यंजन+ अ गुणिताक्षरक बाद बिकारी दऽ सकै छी।
ह्रस्व + चन्द्रबिन्दु= १+० दीर्घ+ चन्द्रबिन्दु= २+०
जेना हँसल= १+१+१ साँस= २+१
बिकारी आ चन्द्रबिन्दुक गणना शून्य हएत।
जा कऽ = २+१ क् =० क= क् +अ= ०+१
क केँ क् पढ़बाक प्रवृत्ति मैथिलीमे आबि गेल तेँ बिकारी देबाक आवश्यकता पड़ल, दीर्घ स्वरमे एहन आवश्यकता नै अछि।
U- ह्रस्वक चेन्ह
।- दीर्घक चेन्ह
एक दीर्घ । =दूटा ह्रस्व U

बहरे मुतकारिब:- सभ पाँतिमे पाँच-पाँच वर्णक संगीत-शब्द चारि बेर ऐ क्रममे:
U । । अरकान सामिल पूर्णाक्षर
आब मैथिलीमे विभक्ति सटलासँ कनेक सुविधा अछि, तैयो शब्दक संख्या चारिसँ बेशी राखि सकै छी मुदा ह्रस्व दीर्घक क्रम वएह राखू।
फ–ऊ–लुन U।।
फ–ऊ–लुन फ–ऊ–लुन फ–ऊ–लुन फ–ऊ–लुन
फ–ऊ–लुन फ–ऊ–लुन फ–ऊ–लुन फ–ऊ–लुन
१
बहरे मुतकारिब मुतकारिब आठ–रुक्न फ ऊ लुन (U।।) – चारि बेर
अनेरे धुनेरे जतेको ठकेलौं
बकैतो ढ़कैतो सुझेलौं घनेरौं
२
बहरे मुतदारिक मुतदारिक आठ–रुक्न फा इ लुन (।U।) – चारि बेर

बीकि गेलै तँ की जोतबै खेतमे
झीकि लेतै तँ की बोलतै बेरमे
३
बहरे कामिल कामिल आठ–रुक्न मु त फा इ लुन (UU।U।) – चारि बेर
इनसान जे कहबैत छै सकुचा कऽ छै जँ ठकैल यौ
बहरा कऽ जे कहतै जँ नै सहिते तँ छै कमजोर यौ
४
बहरे वाफिर वाफिर आठ–रुक्न म फा इ ल तुन (U।UU।) – चारि बेर
अबै अछि ओ सुनै अछि ओ जँ जाइत छै बसै अछि ओ
कहै अछि जे सुनै अछि ओ जँ खाइत छै ढकै अछि ओ
५
बहरे रमल रमल आठ–रुक्न फा इ ला तुन (।U।।) – चारि बेर
झूरझामो भेल छी से बात ने की काटने की

से समेटू से लपेटू आर की की आरने छी

६

बहरे रजज रजज आठ–रुक्न मुस तफ इ लुन (।।U।) – चारि बेर
ऐे ओतऽ की छै केहनो आ की अते की छी अए
नै छै कएलो नै सुनै छै की करै भेटैत-ए

७

बहरे हजज हजज :-आठ–रुक्न म फा ई लुन (U।।।) – चारि बेर
अबै छै नै सुनै छै नै बहीरो छै बुझै छै से
नरैमे छी कटै की से जजातो छै बुझै छै से

१.आब सामिल अराकानक आठ–रुक्नक छः–रुक्न - तीन बेर/ आ चारि–रुक्न - दू बेरक प्रयोग देखब। ई सभ मुफरद बहर अछि माने रुक्नक बेर-बेर प्रयोग होइत अछि।
२.एकर अतिरिक्त सामिल अराकानक १२ टा मुरक्कब बहर अछि माने दू प्रकारक अरकानक बेर-बेर एलासँ १२ सालिम बहर, संगीतक भाषामे मिश्रित। ई तीन तरहक अछि:- ४ रुक्नक बहर, ६ रुक्नक बहर, ८ रुक्नक बहर / मुरक्कब (मिश्रित) पूर्णाक्षरी (सालिम) बहर- १२ टा – तवील, मदीद, मुनसरेह, मुक्तज़ब, मज़ारे, मुजतस, ख़फीफ, बसीत, सरीअ, जदीद, क़रीब, मुशाकिल।
३.आ तकर बाद सामिल आ मुजाहिफ अराकान दुनूक मेल-पेँचसँ बनल १२ टा बहर मख्बून, अखरब, महजूफ, मक्तूअ, मक्बूज, मुज्मर, मरफू, मासूब, महजूज, मकफूफ, मश्कूल, आ अस्लम बहर।
४.आ ऐमे मात्र मुजाहिफ अराकानसँ बनल बेशी प्रयुक्त चारिटा बहर (मुक्तजब, मजारे, मुजतस आ खफीफ)।

१.आब सामिल अराकानक आठ–रुक्नक छः–रुक्न - तीन बेर/ आ चारि–रुक्न - दू बेरक प्रयोग देखब। ई सभ मुफरद बहर अछि माने रुक्नक बेर-बेर प्रयोग होइत अछि।

बहरे मुतकारिब छः–रुक्न फ ऊ लुन (U।।) तीन बेर
एके बेरमे जे कएलौं

बड़े भेर भेनेँ सुनेलौँ
बहरे मुतकारिब चारि–रुक्न फ ऊ लुन (U।।) दू बेर
बड़ी दूर ठाढ़े
कनी दूर नाचे
बहरे मुतदारिक छः–रुक्न फा इ लुन (।U।) तीन बेर
एकरे केलहा केलहीं
तैं अनेरे दुर्गा भेलहीं
बहरे मुतदारिक चारि रुक्न फा इ लुन (।U।) दू बेर
काहि काटी एतै
बात बाँटी एतै
बहरे हजज :- छः रुक्न म फा ई लुन (U।।।) तीन बेर
अनेरे भऽ गेलैं ऐ लड़ैले गै
तखैनो जे भऽ जेतै की गमैए गै
बहरे हजज :- चारि रुक्न म फा ई लुन (U।।।) दू बेर
कने बेगार बेमारी
कते की बात सुनाबी
बहरे रजज़ छः रुक्न मुस तफ इ लुन (।।U।) तीन बेर
ई जे धरा देखैसँ छै हेतै तँ नै
ई जे घटा घूमैसँ घूमै नै तँ नै
बहरे रजज़ चारि रुक्न मुस तफ इ लुन (।।U।) दू बेर
भोरे अएलै कोन गै
सोझे न एलै फोन गै
बहरे रमल छः–रुक्न फा इ ला तुन (।U।।) तीन बेर
की गरीबो की धनीको तैँ सभै छी
की समीपो की कतेको जे घुमै छी
बहरे रमल चारि रुक्न फा इ ला तुन (।U।।) दू बेर
की कतेको बात भेलै
की जतेको लात खेलै
बहरे वाफ़िर छः रुक्न म फा इ ल तुन (U।UU।) तीन बेर
कने ककरा कहेबइ आ बतेबइ की

जते सुनबै तते कहता बतेबइ की
बहरे वाफ़िर चारि–रुक्न म फा इ ल तुन (U।UU।) दू बेर
करेजक बात छै कतबो
करेजक हाल ई नञि हो
बहरे कामिल छः रुक्न मु त फा इ लुन (UU।U।) तीन बेर
अनका कतौ कहबै कने सुनतै कहाँ
सुनि ओ बजौ करतै कने जितबै जहाँ
बहरे कामिल चारि रुक्न मु त फा इ लुन (UU।U।) दू बेर
पहिले अनै तखने सुनै
कहबै कते कखनो करै

२. एकर अतिरिक्त सामिल अराकानक १२ टा मुरक्कब बहर अछि माने दू प्रकारक अरकानक बेर-बेर एलासँ १२ सालिम बहर, संगीतक भाषामे मिश्रित। ई तीन तरहक अछि:- ४ रुक्नक बहर, ६ रुक्नक बहर, ८ रुक्नक बहर / मुरक्कब (मिश्रित) पूर्णाक्षरी (सालिम) बहर- १२ टा –तवील, मदीद, मुनसरेह, मुक्तज़ब, मज़ारे, मुजतस, ख़फीफ, बसीत, सरीअ, जदीद, क़रीब, मुशाकिल।

बहरे तवील फ–ऊ–लुन U।। मफा–ई–लुन U।।।
कहेबै सुनेबै की मुदा जे कहेतै से
सुनेतै उकारो की मुदा जे बजेतै से
बहरे मदीद फा–इ–ला–तुन ।U।। फा–इ–लुन।U।
सूनि बाजू मूँहमे कैकटा छै बातमे
बूझि बाजूमीत यौ कैकटा छै घातमे
बहरे मुनसरेह मुस–तफ–इ–लुन ।।U। मफ–ऊ–ला–तु ।।।U
की की रहै की की भेल कोनो भला कोनो सैह
माँ माँ करी पैघो भेल सेहो जरौ सेहो जैह
बहरे मुक्तजब मफ–ऊ–ला–तु ।।।U मुस–तफ–इ–लुन ।।U।

रामोनाम सेहो उठा रामोनाम सेहो जरा
रामोनाम मोहो लए रामोनाम बातो करा

बहरे मजारे मफा–ई–लुन U।।। फा–इ–ला–तुन ।U।।
अरे की छी सैह नै की अरे छी छी वैह ने छी
बिसारी की उघारी की अरे की की देब ने की
बहरे मुजतस मुस–तफ–इ–लुन ।।U। फा–इ–ला–तुन ।U।।
नै छै रमा नै रहीमो नै छै मरा नै मरीजो
नै ई कनेको मृतो छै नै ई कनेको जियै ओ
बहरे खफीफ फा–इ–ला–तुन ।U।। मुस–तफ–इ–लुन ।।U। फा–इ–ला–तुन ।U।।
रेख राखू फेकू तँ नै देख लेलौं
सूनि राखू बेरो तँ नै बीति गेलौं
बहरे बसीत मुस–तफ–इ–लुन ।।U। फा–इ–लुन।U।
की की रहै की भऽ गै की की छलै की भऽ नै
रीतो बितै ने कऽ गै गीतो बितै गाबि नै
बहरे सरीअ मुस–तफ–इ–लुन ।।U। मुस–तफ–इ–लुन ।।U। मफ–ऊ–ला–तु ।।।U
सेहो कने छै ने अते की केहैत
लेरो चुबै छै ने अते की केहैत
बहरे जदीद फा–इ–ला–तुन ।U।। फा–इ–ला–तुन ।U।। मुस–तफ–इ–लुन ।।U।
लेलहेँ ई बेगुणो आ भेलै भने
बेलगो ई नैहरो आ गेलै भने
बहरे करीब मफा–ई–लुन U।।। मफा–ई–लुन U।।। फा–इ–ला–तुन ।U।।
चलै छै ई कने बाटो जाइ छै नै
गतातोमे भने कोनो बाइ छै नै
बहरे मुशाकिल फा–इ–ला–तुन ।U।। मफा–ई–लुन U।।। मफा–ई–लुन U।।।
मोदमानी अहोभागी कनै छै की
क्रोध जानी प्रणो खाली बनै छै की

३.आ तकर बाद सामिल आ मुजाहिफ अराकान दुनूक मेलपेँचसँ बनल १२ टा बहर मख्बून, अखरब, महजूफ, मक्तूअ, मक्बूज, मुज्मर, मरफू, मासूब, महजूज, मकफूफ, मश्कूल, आ अस्लम बहर।

मख्बून: बहरे रमल मुसद्दस मख्बून

फा–इ–ला–तुन ।U।। फ–इ–ला–लुन UU।। फ–इ–ला–लुन UU।।

खेल खेला असली ऐ अगबे नै

मिलमिला अँखिगौरो बतहे नै

अखरब: बहरे हजज मुरब्बा अखरब

मफ–ऊ–लु ।।U मफा–ई–लुन U।।।

की भेल लट्टू बूड़

के गेल अत्ते जोड़

महजूफ: बहरे रमल मुसम्मन महजूफ

फा–इ–ला–तुन ।U।। फा–इ–ला–तुन ।U।। फा–इ–ला–तुन ।U।। फा इ लुन । U ।

एनमेनो भेल गेलौ आश आगाँ बीतलौ

सूनि गेलौं नै भगेलौं नाश नारा गीत यौ

मक्तूअ: बहरे मुतदारिक मुसद्दस मक्तूअ

फा–इ–लुन।U। फा–इ–लुन।U। फै–लुन ।।

कीसँ की भेल छी बाबू

कीसँ की कैल छी आगू

मक्बूज: बहरे मुतकारिब मुसम्मन मक्बूज (एहिमे सभटा मुज़ाहिफ अरकान)

फ ऊ लुन U । । फ ऊ लुन U । । फ ऊ लुन U । । फ–ऊ–लु U।U

अरे रे अहाँ जे कहेलौं सिनेह

अरे रे अहाँ जे बजेलौं सिनेह

मुज्मर: बहरे कामिल मुसद्दस मुज्मर (एहिमे सभटा अरकान सामिल)

मु–त–फा–इ–लुन UU।U। मु–त–फा–इ–लुन UU।U। मुस–तफ–इ–लुन ।।U।

अनठयने रहबै रहबै हरे हे रोमबै
अनठयने रहबै रहबै अरे हे घूरिऐ
मरफू: बहरे मुक्तजिब मुसद्दस मरफू
मफ–ऊ–ला–तु ।।।U मफ–ऊ–ला–तु ।।।U मफ–ऊ–लु ।।U
की की रेह की की सैह निंघेस
की की रेह की की यैह निंघेस
मासूब – बहरे वाफिर मुसद्दस (एहिमे सभटा <u>अरकान सामिल)</u>
मफा–इ–ल–तुन U।UU। मफा–इ–ल–तुन U।UU। मफा–ई–लुन U।।।
अरे अनलौं सुहागिन यै अनेरो की
अरे अनलौं मुहोथरिमे जनेरो की

महजूज: बहरे मुतदारिक मुसम्मन महजूज (एहिमे सभटा <u>मुज़ाहिफ अरकान)</u>
फा इ लुन । U । फा इ लुन । U । फा इ लुन । U । फा ।
के रहै सूनि यै ई अहाँकेँ
के रहै कूदि यै ई अहाँकेँ
मकफूफ: बहरे हजज मुसम्मन मकफूफ
मफा–ई–लुन U।।। मफा–ई–लुन U।।। मफा–ई–लुन U।।। म–फा–ई–लु U।।U
अनेरे की अनेरे की धुनेरे की कहेलौं हँ
अनेरे की अनेरे की धुनेरे की कहेलौं हँ
मश्कूल: बहरे रमल मुसम्मन मश्कूल
फा–इ–ला–तुन ।U।। फा–इ–ला–तुन ।U।। फा–इ–ला–तुन ।U।। मफ–ऊ–लु ।।U
सूनि सुन्झा केलियै ने कोन पापी छोड़ाइ
सूनि सुन्झा केलियै ने कोन पापी छोड़ाइ
अस्लम: बहरे मुतकारिब मुसद्दस अस्लम
फ–ऊ–लुन U।। फ–ऊ–लुन U।। फ–अल् U।
अरे की अरे की अहाँ
अरे की अरे की अहाँ

४.आ ऐमे मात्र मुजाहिफ अराकानसँ बनल बेशी प्रयुक्त चारिटा बहर (मुक्तजब, मजारे, मुजतस आ खफीफ)।

बहरे मुक्तजब (मुजाहिफ रूप) (अपूर्णाक्षरी आठ रुक्न):फ ऊ लु U । U फै लुन U । फ ऊ लु U।U फै लुन। ।

कतेक गपो कतेक सप्पो
कतेक मिलै रहैत छै ओ
बहरे मज़ारे (मुजाहिफ रूप) (अपूर्णाक्षरी आठ रुक्न):मफ ऊ लु । । U फा इ ला तु । U । U म फा ई लु U । । U फा इ लुन। U । / फा इ ला न। U । U
ने छैक नै इनाम कते कोन छानि गै
ने छैक नै नकाम कते कोन कानि गै
बहरे मुजतस (मुजाहिफ रूप) (अपूर्णाक्षरी आठ–रुक्न):म फा इ लुन U । U । फ इ ला तुन U U । । म फा इ लुन U । U । फै लुन। ।/ फ–इ–लुन UU।
भने भले करतै की भने भले भेटौ
कते कते जरतै ई कते कने देखौ
बहरे खफीफ (मुजाहिफ रूप) (अपूर्णाक्षरी छः रुक्न):फा इ ला तुन । U । । म फा इ लुन U । U । फै लुन। । / फ इ लुन U U ।
देख लेलौं दिवारसँ बेचै कखनो
बेख देखै गछारसँ हेतै निक ओ
गजल द्वारा किछु संदेश, किछु भावनात्मक अभिव्यक्ति, किछु जीवन दर्शन, सौन्दर्य आकि प्रेम ओ विरहक सौन्दर्य प्रदर्शित रहबाक चाही। किछु एहेन जे सायास नै अनायास हुअए। तेँ गजल आन पद्य-कविता जेना- कहल जेबाक चाही, लिखल नै। लिखल तँ चित्र जाइत अछि- मिथिला चित्रकला लिखिया द्वारा लिखल जाइत अछि, संस्कृतमे हम कहै छिऐ- अहं चित्रं लिखामि। गजलक विषय अलग होइत अछि, गजलशास्त्रक आधारपर भजन लिख देलासँ ओ गजल नै भऽ जाएत। अरबीमे तँ गजलक अर्थे होइ छै स्त्रीसँ वार्तालाप। गजल प्रेम विरहक

बादो, नै पौलाक बादो, लोकापवाद आ तथाकथित अवैध रहलाक उत्तरो प्रेमक रस लैत अछि। ई प्रेम भगवान आ भक्तक बीच सेहो भऽ सकैत अछि, शारीरिक आ आध्यात्मिक भऽ सकैत अछि। ई राधाक प्रेम भऽ सकैत अछि तँ मीराक सेहो। ई प्रेम दुनू दिससँ हुअए सेहो जरूरी नै। भावनाक उद्रेक आ संगमे गजल कहि कऽ आत्मतुष्टिक लेल गजलकार भावनाक उद्रेककेँ क्षणिक नै वास्तविक आ स्थायी बनाबथि तखने नीक गजल लिखि सकै छथि।

रुबाइ:

रुबाइक चतुष्पदीमे पहिल दोसर आ चारिम पाँती काफिया युक्त होइत अछि; आ मात्रा २० वा २१ होइत अछि।

रुबाइमे मात्रा २० वा २१ राखू। रुबाइक सभ पाँतीक प्रारम्भ दू तरहेँ होइत अछि- १.दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ (मफ–ऊ–लु ।।U)सँ वा २.दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व (मफ–ऊ–लुन ।।।) सँ। ओना फारसी रुबाइमे पाँती सभ लेल प्रारम्भक आगाँक ह्रस्व-दीर्घ क्रम निर्धारित छै, मुदा मैथिली लेल अहाँ २०-२१ मात्राक कोनो छन्द जे १.दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ (मफ–ऊ–लु ।।U)सँ वा २.दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व (मफ–ऊ–लुन ।।।) सँ प्रारम्भ होइत हुअए, तकरा उठा सकै छी। पाँती २० वा २१ मात्राक हेबाक चाही माने (मफ–ऊ–लु ।।U) वा (मफ–ऊ–लुन ।।।) सँ प्रारम्भ हेबाक चाही।
मुदा एक रुबाइक वाक्य सभक बहर वा छन्द/ लय एकसँ बेशी तरहक भऽ सकैए। चारू पाँतीमे सेहो काफियाक मिलान भऽ सकैए।
आन चतुष्पदी जइमे पहिल, दोसर आ चारिम पाँती काफिया युक्त होइत अछि मुदा मात्रा २०-२१ नै हुअए से रुबाइ नै।
मैथिलीमे मुदा "कता"क परिभाषामे ओ आओत जँ प्रारम्भ दीर्घ-दीर्घसँ हुअए मुदा छन्द आगाँ सरल वार्णिक, वार्णिक वा, मात्रिक हुअए। “कता”क प्रारम्भ दीर्घ-दीर्घसँ हेबाक छै आगाँ सरल वार्णिक, मात्रिक वा वार्णिकमे सँ कोनो एकमे शेर लिखि सकै छी, कमसँ कम दोसर आ चारिम पाँतीक काफिया मिलबाक चाही।
रुबाइक चतुष्पदीक चारिम पाँतीमे भावक चरम हेबाक चाही।

रुबाइ

कारी अनहार मेघ, आ नै होइए
कत्तौ बलुआ माटि, खा नै होइए
दाहीजरती देखि, हिलोरै-ए मेघ
भगजोगनी भकरार, जा नै होइए

बहर आ छन्दक मिलानी

गजल कोनो ने कोनो बहर (छन्द) मे हेबाक चाही। वार्णिक छन्दमे सेहो ह्रस्व आ दीर्घक विचार राखल जा सकैत अछि, कारण वैदिक वर्णवृत्तमे बादमे वार्णिक छन्दमे ई विचार शुरू भऽ गेल छल:- जेना
तकैत रहैत छी ऐ मेघ दिस
तकैत (ह्रस्व+दीर्घ+दीर्घ)- वर्णक संख्या-तीन
रहैत (ह्रस्व+दीर्घ+ह्रस्व)- वर्णक संख्या-तीन
छी (दीर्घ) वर्णक संख्या-एक
ऐ (दीर्घ) वर्णक संख्या-एक
मेघ (दीर्घ+ह्रस्व) वर्णक संख्या-दू
दिस (ह्रस्व+ह्रस्व) वर्णक संख्या-दू
मात्रिक छन्दमे द्विकल, त्रिकल, चतुष्कल, पञ्चकल आ षटकल अन्तर्गत एक वर्ण (एकटा दीर्घ) सँ छह वर्ण (छहटा ह्रस्व) धरि भऽ सकैए।
द्विकलमे- कुल मात्रा दू हएत, से एकटा दीर्घ वा दूटा ह्रस्व हएत।
त्रिकलमे कुल मात्रा तीन हएत- ह्रस्व+दीर्घ, दीर्घ+ह्रस्व आ ह्रस्व+ह्रस्व+ह्रस्व; ऐ तीन क्रममे।
चतुष्कलमे कुल मात्रा चारि; पञ्चकलमे पाँच; षटकलमे छह हएत।
वार्णिक छन्द तीन-तीन वर्णक आठ प्रकारक होइत अछि जकरा "यमाताराजसलगम्" सूत्रसँ मोन राखि सकै छी।
आब कतेक पाद हएत आ कतऽ काफिया (यति,अन्त्यानुप्रास) देबाक अछि; कोन तरहेँ क्रम बनेबाक अछि से अहाँ स्वयं वार्णिक/ मात्रिक आधारपर कऽ सकै छी, आ विविधता आनि सकै छी।
वर्ण छन्दमे तीन-तीन अक्षरक समूहकेँ एक गण कहल जाइत अछि। ई

आठ टा अछि-
यगण U।।
रगण ।U।
तगण ।। U
भगण । U U
जगण U। U
सगण U U ।
मगण ।।।
नगण U U U

ऐ आठक अतिरिक्त दूटा आर गण अछि- ग / ल
ग- गण एकल दीर्घ ।
ल- गण एकल ह्रस्व U
एक सूत्र- आठो गणकेँ मोन रखबा लेल:-
यमाताराजभानसलगम्
आब ऐ सूत्रकेँ तोड़ू-
यमाता U।। = *यगण*
मातारा ।।। *= मगण*
ताराज ।। U = *तगण*
राजभा ।U। = *रगण*
जभान U। U = *जगण*
भानस । U U = *भगण*
नसल U U U = *नगण*
सलगम् U U । = *सगण*

बहर आ संस्कृत छन्दक मिलानी

बहरे मुतकारिब मुतकारिब आठ–रुक्न फ ऊ लुन (U।।) – चारि बेर
वर्णवृत्त भुजंगप्रयात : प्रति चरण यगण (U।।) – चारि बेर। बारह वर्ण। पहिल, चारिम, सातम आ दसम ह्रस्व, शेष दीर्घ। छअम आ आखिरी वर्णक बाद *अर्द्ध*-विराम।

बहरे मुतकारिब *चारि–रुक्न फ ऊ लुन (U।।) – दू बेर*
वर्ण वृत्त सोमराजी यगण (U।।) – *दू बेर। छह वर्ण। पहिल आ चारिम ह्रस्व, शेष दीर्घ। दोसर आ अन्तिम वर्णक बाद अर्द्ध-विराम।*
मात्रिक रूप- प्रति चरण बीस मात्रा। पहिल, छअम, एगारहम आ सोलहम मात्रा ह्रस्व।
बहरे मुतदारिक मुतदारिक आठ–रुक्न फा इ लुन (।U।) – चारि बेर
वर्ण वृत्त स्रग्विणी रगण (।U।) – चारि बेर। बारह वर्ण। दोसर, पाँचम, आठम आ एगारहम ह्रस्व आ शेष दीर्घ। छअम आ आखिरी वर्णक बाद *अर्द्ध*-विराम।
मात्रिक रूप- प्रति चरण बीस मात्रा। तेसर, आठम, तेरहम आ अठ्ठारहम मात्रा ह्रस्व।
महजूफ: बहरे रमल मुसम्मन महजूफ **फा–इ–ला–तुन ।U।। फा–इ–ला–तुन ।U।। फा–इ–ला–तुन ।U।। फा इ लुन । U ।**
मात्रिक छंद गीतिका -प्रति चरण २६ मात्रा। तेसर, दसम, सत्रहम आ चौबीसम मात्रा ह्रस्व।
गीतिका-वर्णवृत्त २० वर्ण एकटा सगण, दूटा जगण, एकटा भगण, एकटा रगण, एकटा सगण, एकटा लगण आ एकटा गगण। तेसर, पाँचम, आठम, दसम, तेरहम, पन्द्रहम, अठारहम आ बीसम वर्ण दीर्घ आ शेष ह्रस्व। पाँचम, बारहम आ अन्तिम वर्णक बाद अर्द्ध-विराम।
महजूज: बहरे मुतदारिक मुसम्मन महजूज (ऐमे सभटा मुज़ाहिफ अरकान) **फा इ लुन । U । फा इ लुन । U । फा इ लुन । U । फा ।**
वर्ण वृत्त बाला-१० वर्ण। प्रति चरण रगण **। U ।** *तीन बेर आ फेर एकटा दीर्घ* **।**
मात्रिक रूप- प्रति चरण सत्रह मात्रा। तेसर, आठम, तेरहम मात्रा ह्रस्व आ आखिरीमे एक दीर्घ **।** *आकि दूटा ह्रस्व* **U**

मैथिली गजलक आरम्भिक स्वरूप

"हमरा मानसपटलपर मैथिलीक सम्मानित आलोचक श्री रमानन्द झा “रमणक” ओ वाक्य औखन ओहिना अंकित अछि जइमे ओ मैथिलीक

वर्तमान गीत-गजलकेँ मंचीय यश एवं अर्थलाभक औजार कहिकऽ एकर महत्वकेँ एकदम्मे नकारि देने रहथि (सन्दर्भ- मिथिला मिहिर, फरबरी-१९८३); ... कोनो आलोचककेँ एहेन गैर जिम्मेदारीबला वक्तव्य देबाक की अधिकार? भारतीय संविधानमे भाषणक स्वतंत्रता एकटा मौलिक अधिकार छैक तैँ?" (सियाराम झा "सरस", दीपोत्सव, १८/१०/९०; आमुख, लोकवेद आ लालकिला)
वियोगी लोकवेद आ लालकिलाक एकटा दोसर आमुखमे लिखै छथि- "छन्दशास्त्रक निअमपर आधारित हेबाक उपरान्तो ऐमे गजलकारकेँ गणना-निअमक स्वातन्त्र्यक अधिकार रहै छै।" (!)
देवशंकर नवीन लिखै छथि –"...पुनः डॉ. रामदेव झाक आलेख आएल। ऐ निबन्धमे दूटा अनर्गल बात ई भेल, जे गजलक पंक्ति लेल, छन्द जकाँ मात्रा निर्धारण करऽ लगला.."।

लोकवेद आ लालकिलामे गजल शुरू हेबासँ पहिने कएकटा आलेख अछि, मैथिली गजलपर कोनो सकारात्मक टिप्पणी तँ नै अछि ऐ सभमे, हँ मुदा समीक्षककेँ लाठी हाथे "*ई सभ मैथिली गजल थिक, गजले टा थिक*" कहबापर विवश करैत प्रहार सभ अवश्य अछि।
गजल कतेको ढंगसँ कतेको बहरमे कतेको छन्दमे लिखल जा सकैए, ई सत्य अछि, मुदा गणना निअमक स्वातन्त्र्यक अधिकार ने मात्रिक गणनामे छै आ ने वार्णिक गणनामे।
हाइकूमे सिलेबल आ वर्णक मिलानी अंग्रेजी हाइकूक आरम्भिक लेखनमे नै भऽ सकल, देखल गेल जे ५/७/५ सिलेबलमे बेसी अल्फाबेट आबि गेल, जापानीमे ओतेक अल्फाबेट ५/७/५ सिलेबलमे नै छल। मैथिलीक आरम्भिक हाइकूमे सेहो ५/७/५ सिलेबलक अनुकरण करैत ज्योति सुनीत चौधरी अपन कविता संग्रह "अर्चिस्" मे बेसी वर्णक प्रयोग केलन्हि। तँ हम सलाह देलौं जे मैथिली हाइकू सरल वार्णिक छन्दक आधारपर लिखल जाए, जइमे ह्रस्व-दीर्घक विचार नै हुअए। संस्कृतमे १७ सिलेबलबला वार्णिक छन्दमे नोकमे नोक मिला कऽ १७ टा वर्ण होइ छै- जेना शिखरिणी, वंशपत्र पतितम्, मन्दाक्रान्ता, हरिणी, हारिणी, नरदत्तकम्, कोकिलकम् आ भाराक्रान्ता। से ५/७/५ मे १७ सिलेबल लेल

१७ टा वर्ण हाइकू लेल लेल गेल, से आब ज्योतिजी सेहो लऽ रहल छथि, हम सेहो लऽ रहल छी आ मिहिर झा, इरा मल्लिक, उमेश मंडल, रामविलास साहु आदि सेहो लऽ रहल छथि। रुबाइमे हमर सलाह छल जे एतऽ सरल वार्णिक छन्दक प्रयोग सम्भव नै अछि, कारण एकर प्रारम्भ दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ वा दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व सँ होइत अछि से चाहे तँ ह्रस्व-दीर्घक मिलानी खाइत वार्णिक छन्दक प्रयोग करू वा मात्रिक छन्दक। रुबाइक चतुष्पदीमे कमसँ कम पहिल, दोसर आ चारिम पाँती काफिया युक्त होइत अछि; आ मात्रा २० वा २१ हेबाक चाही। कारण चारू पाँती चारि तरहक बहर (छन्द) मे लिखल जा सकैए से निअमकेँ आगाँ नमरेबाक आवश्यकता नै छै, हँ ई निर्णय करैए पड़त जे चारू पाँतीमे वार्णिक वा मात्रिक गणना पद्धति जे ली, से एक्के हेबाक चाही।
गजलमे मुदा अहाँ वार्णिक, सरल वार्णिक वा मात्रिक छन्दक प्रयोग कऽ सकै छी, मुदा एक गजलमे दूटा बौस्तु मिज्झर नै करू। बिन छन्द वा बहरक गजल अहाँ कहि सकै छी, समीक्षककेँ लुलुआ कऽ आ लाठी हाथे; मुदा ओ गजल नै हएत, उर्दू/ फारसीमे तँ मुशायरामे अहाँकेँ ढुकैये नै देत। आ आब जखन रोशन झा, प्रवीण चौधरी प्रतीक, आशीष अनचिन्हार आदि युवा गजलकार अन्तर्जालपर एकटा टिप्पणीक बाद सरल वार्णिक छन्दमे गजलकेँ संशोधित कऽ सकै छथि, तँ लालकिलावादी गजलकार लोकनि ई किए नै कऽ सकै छथि? मायानन्द मिश्र "गीतल" कहि आ गंगेश गुंजन "गजल सन किछु मैथिलीमे" कहि जे गलत परम्पराकेँ जारी रखबाक निर्णय लेने छथि तकरा बाद अजित आजाद आ आन युवा गजलकार जँ बिना छन्द/ बहरक गजल लिखै छथि तँ एकरा हम मायानन्द मिश्र, गंगेश गुंजन आ लालकिलावादी अ-गजलकार लोकनिक दुष्प्रभावे बुझै छी।

लोकवेद आ लालकिला:

आत्ममुग्ध आमुख सभक बाद ऐ संग्रह मे कलानन्द भट्ट, तारानन्द वियोगी, डॉ. देवशंकर नवीन, नरेन्द्र, डॉ. महेन्द्र, रमेश, रामचैतन्य "धीरज", रामभरोस कापड़ि "भ्रमर", रवीन्द्र नाथ ठाकुर, विभूति आनन्द, सियाराम झा "सरस" आ सोमदेवक गजल देल गेल अछि।

कलानन्द भट्ट

भोर आनब हम दोसर उगायब सुरुज

करब नूतन निर्माण हम बनायब सुरुज

सरल वार्णिकक अनुसारे गणना- पहिल पाँती-१७ वर्ण दोसर पाँती- १८ वर्ण; जखन सरल वार्णिकेमे गणनाक अन्तर अछि तँ ह्रस्व दीर्घ विचारपर जेबाक मेहनति बचि गेल।

मात्रिक गणनाक अनुसार- पहिल पाँती-२१ मात्रा, दोसर पाँती- २१ मात्रा, मात्रा मिल गेलासँ आब ह्रस्व दीर्घ पर चली। पहिल पाँती **दीर्घ-ह्रस्व**-*दीर्घ*-**ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व**-ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व (एतऽ दूटा लगातार ह्रस्वक बदला एकटा दीर्घ दऽ सकै छी, से दोसर पाँतीमे देखब)। दोसर पाँती- **ह्रस्व-हस्व-ह्रस्व**-*दीर्घ*-**ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व**-दीर्घ- ह्रस्व-हस्व- ह्रस्व-हस्व-दीर्घ- ह्रस्व-हस्व- ह्रस्व-हस्व-ह्रस्व। मुदा एतऽ गाढ़ कएल अक्षरक बाद क्रम टूटि गेल।

तारानन्द वियोगी

दर्द जँ हद कँ टपल जाए तँ आगि जनमै अछि

बर्फ अंगार बनल जाए तँ आगि जनमै अछि

सरल वार्णिकक अनुसारे गणना- पहिल पाँती-१९ वर्ण दोसर पाँती- १८ वर्ण; जखन सरल वार्णिकेमे गणनाक अन्तर अछि तँ ह्रस्व दीर्घ विचारपर जेबाक मेहनति बचि गेल।

मात्रिक गणनाक अनुसार- पहिल पाँती-२५ मात्रा, दोसर पाँती- २५ मात्रा, मात्रा मिल गेलासँ आब ह्रस्व दीर्घ पर चली। **दीर्घ** (संयुक्ताक्षरकँ पहिने)-*ह्रस्व*-**ह्रस्व-ह्रस्व**-ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व-दीर्घ-ह्अस्व-ह्रस्व।(एतऽ दूटा लगातार ह्रस्वक बदला एकटा दीर्घ दऽ सकै छी, से दोसर पाँतीमे देखब)। दोसर पाँती- **दीर्घ** (संयुक्ताक्षरकँ पहिने)-*ह्रस्व*-**दीर्घ**-दीर्घ एतऽ क्रमभंग भऽ गेल।

देवशंकर नवीन

अँटा लेब समय-चक्र, सहजहि एहि आँखि बीच

नबका प्रभात लेल, क्रान्ति कोनो ठानि लेब

सरल वार्णिकक अनुसारे गणना- पहिल पाँती-१९ वर्ण दोसर पाँती- १६ वर्ण; जखन सरल वार्णिकेमे गणनाक अन्तर अछि तँ ह्रस्व दीर्घ विचारपर

जेबाक मेहनति बचि गेल।
मात्रिक गणनाक अनुसार- पहिल पाँती-२५ मात्रा, दोसर पाँती- २५ मात्रा, मात्रा मिलि गेलासँ आब ह्रस्व दीर्घ पर चली। ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व (एतऽ दूटा लगातार ह्रस्वक बदला एकटा दीर्घ दऽ सकै छी, से दोसर पाँतीमे देखब)। दोसर पाँती- **ह्रस्व-**ह्रस्व-दीर्घ- मुदा एतऽ गाढ़ कएल अक्षरक बाद क्रमटूटि गेल।

नरेन्द्र

निकलू तँ सजिकऽ सजाकैँ
बासन ली ठोकि बजाकैँ

सरल वार्णिकक अनुसारे गणना- पहिल पाँती-१० वर्ण दोसर पाँती- ९ वर्ण; जखन सरल वार्णिकेमे गणनाक अन्तर अछि तँ ह्रस्व दीर्घ विचारपर जेबाक मेहनति बचि गेल।
मात्रिक गणनाक अनुसार- पहिल पाँती-१३ मात्रा, दोसर पाँती-१४, मात्रा गणनाक अन्तर अछि तँ ह्रस्व दीर्घ विचारपर जेबाक मेहनति बचि गेल।

डॉ महेन्द्र

चलैछ आदमी सदिखन चलैत रहबा लए
जीबैछ आदमी सदिखन कलेस सहबा लए

सरल वार्णिकक अनुसारे गणना- पहिल पाँती-१८ वर्ण दोसर पाँती- १८ वर्ण। मुदा तेसर शेरमे दोसर पाँतीमे १६ वर्ण आबि गेल अछि। मात्रिकमे सेहो उपरका दुनू पाँतीमे क्रमसँ २४ आ २५ वर्ण अछि।

रमेश

जखन-जखन साओनक ओहास पड़ैए
हमर छाती मे गजलक लहास बरैए

सरल वार्णिकक अनुसारे गणना- पहिल पाँती-१६ वर्ण दोसर पाँती- १६ वर्ण। मुदा दोसर शेरक पहिल पाँतीमे १५ वर्ण। मात्रिकमे सेहो उपरका दुनू पाँतीमे २२ वर्ण अछि। मुदा ह्रस्व-दीर्घ गणनामे दोसरे शब्दमे ई मारि खा जाइए।
ई दोष शेष गजलकारमे सेहो देखबामे अबैए।

एकर अतिरिक्त सुरेन्द्रनाथक “गजल हमर हथियार थिक”, सियाराम झा “सरस”क “थोड़े आगि थोड़े पानि”, रमेशक “नागफेनी” आ तारानन्द वियोगीक “अपन युद्धक साक्ष्य” मे सँ किछु किताब लाठी हाथे मैथिली साहित्यमे गजल संग्रहक रूपमे साहित्य अकादेमीक सर्वे ऑफ मैथिली लिटेरेचरक *उत्तर जयकान्त मिश्र संस्करण*मे आबि गेल अछि, किछु ऐ साहित्यक इतिहासक अगिला संस्करणमे आबि जाएत! अरविन्द ठाकुरक गजल सेहो पत्र-पत्रिकामे गजल कहि छपि रहल अछि, से अही परम्पराकेँ आगाँ बढ़बैत अछि।

जँ ई सभ गजल नै अछि तँ पद्य तँ अछि आ तइ रूपमे एकर विवेचन तँ हेबाके चाही। ऐ क्रममे रवीन्द्रनाथ ठाकुरक “लेखनी एक रंग अनेक” देखू। मैथिली गजल संग्रहक रूपमे ई पोथी आइसँ २५ बर्ख पूर्व आएल। सोमदेव आ भ्रमरक संग हिनको गजल लालकिलावादक परिभाषामे नै अबैत अछि। गजल नै मुदा पद्यक रूपमे एकर स्थान मैथिली साहित्यमे सुरक्षित छै, मुदा ई आन वर्णित गजलक तथाकथित संकलनक विषयमे नै कहल जा सकैए।

एक छन्द, एक बाँसुरी, एक धुन सुनयबालेऽ
लियौ ई एक गजल, आई गुनगुनयबालेऽ
(रवीन्द्रनाथ ठाकुर “लेखनी एक रंग अनेक”)

मैथिली गजलक पहिल दुर्भाग्य तखन देखा पड़ैत अछि जखन एतऽ गजलकेँ मुस्लिम धर्मसँ जोड़ि कऽ देखल जाए लगलै आ मुस्लिम धर्म आ ओकर साहित्यकेँ अछोप मानि लेल गेलै। गजलक प्रारम्भ इस्लामक आगमनसँ पूर्वक घटना अछि आ अवेस्ता आ वैदिक संस्कृत मध्य ढेर रास साम्य अछि। दोसर दुर्भाग्य मायानंद मिश्रक ओ कथन भेल जइमे ओ घोषणा केलथि जे मैथिलीमे गजल लिखले नै जा सकैए, हुनकर तात्पर्य दोसर रहन्हि मुदा लोक अही तरहेँ ओकरा प्रस्तुत करऽ लागल, कारण ओ स्वयम् गीतल नामसँ गजल लिखलन्हि। मैथिली गजलमे "अनचिन्हार आखर" सन अन्तर्जालीय जालवृत्त उपस्थित भेल, जतऽ बहर (छन्दयुक्त) गजल आ गजलकारक लाइन लागि गेल। मुदा सभसँ बड़का दुर्भाग्य ई भेलै जे मैथिलीक किछु तथाकथित शाइर सभ रामदेव झा द्वारा बहर संबंधी विचारकेँ नकारि देलन्हि (देखू- लोकवेद आ

लालकिलामे देवशंकर नवीन जीक आलेख)। जँ वर्तमानमे गजलक परिदृश्यकेँ देखी तँ मोटामोटी दूटा रेखा बनैत अछि (जकरा हम दू युगक नाम देने छी), पहिल भेल "जीवन युग" आ दोसर भेल "अनचिन्हार युग"। आब कने दुनू युगपर नजरि देल जाए।

१.जीवन युग- ऐ युगक प्रारंभ हम जीवन झासँ केने छी जे आधुनिक मैथिली गजलक पिता

मानल जाइ छथि मुदा ओ कम्मे गजल लिख सकला। मुदा हुनका बाद मायानंद, इन्दु, रवीन्द्रनाथ

ठाकुर, सरस, रमेश, नरेन्द्र, राजेन्द्र विमल, धीरेन्द्र प्रेमर्षि, रौशन जनकपुरी, अरविन्द ठाकुर,

सुरेन्द्र नाथ, तारानंद वियोगी आदि गजलगो सभ भेला। रामलोचन ठाकुर जीक बहुत रचना

गजल अछि मुदा ओ अपने ओकर क्रम-विन्यास कविता-गीत जकाँ बना देने छथिन्ह मुदा किछु

गजलक श्रेणीमे सेहो अबैए। ऐ “जीवन युग”क गजलक प्रमुख विशेषता अछि बे-बहर अर्थात

बिन छंदक गजल। ओना बहरकेँ के पुछैए जखन सुरेन्द्रनाथ जी काफियेक ओझरीमे फँसल रहि

जाइ छथि। एकर अतिरिक्त आर सभ विशेषता अछि ऐ युगक। आ जँ एकै पाँतिमे कहऽ

चाही तँ पाँति बनत---"गजल थिक, ई गजल थिक, आ इएह टा गजल थिक"।

२.आब कने आबी " अनचिन्हार युग" पर। ऐ युगक प्रारंभ तखन भेल जखन इंटरनेटपर मैथिलीक पहिल गजल आ शेरो-शाइरीकेँ समर्पित ब्लाग "अनचिन्हार आखर" (http://anchinharakharkolkata.blogspot.com) क जन्म भेल आ ऐ “अनचिन्हार

आखर” जालवृत्तक नामपर हम ऐ युगक नाम "अनचिन्हार युग" रखलौं अछि। ऐ युगक किछु

विशेषता देखल जाए-

गजलक परिभाषिक शब्द आ बहरक निर्धारण- ई श्रेय "अनचिन्हारे आखर"केँ छै जे ओ हमरासँ "मैथिली गजल शास्त्र" लिखेलक। आ ई मैथिलीक पहिल एहन शास्त्र भेल जइमे गजलक विवेचन मैथिली भाषाक तत्वपर कएल गेलै। तकरा बाद आशीष अनचिन्हार सेहो "गजलक संक्षिप्त परिचय" लिख ऐ परंपराकेँ पुष्ट केलथि। आ एकरे फल थिक जे सभ नव-गजलकार बहरमे गजल कहि रहल छथि।

स्कूलिंग- "अनचिन्हार आखर" गजल कहेबाक परंपरा शुरू केलक आ तइमे सुनील कुमार झा, दीप नारायण "विद्यार्थी", रोशन झा, प्रवीन चौधरी "प्रतीक", त्रिपुरारी कुमार शर्मा, विकास झा "रंजन", सद्रे आलम गौहर, ओमप्रकाश झा, मिहिर झा, उमेश मंडल आदि गजलकार उभरि कऽ एला।

गजलमे मैथिलीक प्रधानता----"अनचिन्हार युग" सँ पहिने गजलमे उर्दू-हिन्दी शब्दक भरमार छल आ मान्यता छल जे बिना उर्दू-हिन्दी शब्दक गजल कहले नै जा सकैए। मुदा "अनचिन्हार आखर" ऐ कुतर्ककेँ धवस्त केलक आ गजलमे १००% मैथिली शब्दक प्रयोगकेँ सार्वजनिक केलक।

गजलक लेल पुरस्कार योजना--- "अनचिन्हार आखर" मैथिली साहित्यक इतिहासमे पहिल बेर गजल लेल अलगसँ पुरस्कार देबाक घोषणा केलक। ऐ पुरस्कारक नाम "गजल कमला-कोसी-बागमती-

महानंदा" पुरस्कार अछि।

ऊपर चारू विशेषताक आधारपर एकटा अंतिम मुदा सभसँ बड़का विशेषता जे निकलल ओ थिक मायानंद मिश्रक ओइ कथनक खंडन, जकर अभिप्राय छल जे मैथिलीमे बहरयुक्त गजल लिखल नै जा सकैए। "अनचिन्हार आखर" सरल वार्णिक, वार्णिक आ मात्रिक छन्दक अतिरिक्त फारसी/ उर्दू बहरमे सेहो मैथिली गजल लिखबाक शास्त्र ओ उदाहरण खाँटी मैथिली शब्दावलीमे प्रस्तुत केलक।

गजल, रुबाइ, कता, हाइकू, शेनर्यू, टनका, हैबून, कुण्डलिया, दोहा, रोला ई सभ एकटा स्थापित विधा अछि। स्थापित विधा माने जकर लिखबाक विधि जइ भाषा सभक ई मूल खोज अछि, ओइ भाषामे स्थापित भऽ गेल अछि। जँ हाइकू लिखबा काल कोनो निअम पालन नै करी तँ ओकर नाम क्षणिका पड़ि गेलासँ ओ हाइकू दोषविहीन नै भऽ जाएत। जँ कोनो भाषासँ हम गजल/ रुबाइ/ कता मैथिलीमे प्रयोग लेल सोचै छी तँ ऐ कारणसँ जे ओ ओइ भाषाक चमत्कारिक चीज अछि, आ मैथिलीक छौंक लगलासँ कोनो आर चमत्कारक हम आशा राखै छी। सएह हाइकू, शेनर्यू, टनका आ हैबून लेल सेहो लागू अछि। आब एतऽ ई देखबाक अछि जे कोनो विधाक आयात सतर्कतासँ हुअए, जइ विधाक सैद्धान्तिक पक्ष सुदृढ़ छै। से जेना तेना आयात कऽ हाथपर हाथ धरि सए बर्ख आर इन्तजार करी ई सोचि जे तकर बाद एकर मैथिली छौंकबला अलग सिद्धान्त बनत, तँ तइ लेल स्थापित विधाक आयातक कोन बेगरता? एते समएमे तँ एकटा आर नव विधा बनि जाएत!

हँ, मात्र लिप्यंतरण कऽ देलासँ उर्दूक सभ गजलक निअम हिन्दीक भऽ जाइत अछि, मुदा ओतौ वर्तनीक भिन्नता मारते रास काफियाक उपनिअमक निर्माणक बाध्यता उत्पन्न करैत अछि। मैथिली तँ साफे अलग भाषा अछि तेँ एकर काफियाक निअम सोझे आयातित नै भऽ सकैए। बहरमे वर्ण/ मात्राक गणना पद्धति सेहो हिन्दी-उर्दूमे मात्र कोनो

खास शब्दक वर्तनीक भिन्नताक कारण कखनो काल उपनिअम बनेबाक खगता अनुभूत करबैए, मुदा से मैथिलीमे सोझे आयातित नै भऽ सकैए कारण ई साफे अलग भाषा थिक। तँ की काफिया आ बहरक वर्ण/ मात्रा गणना पद्धति मैथिलीमे साफे छोड़ि देल जाए? आकि ओइ मे ततेक ढील दऽ देल जाए जे ओकर कोनो मतलबे नै रहए? आ तखन जे बहरमे लिखथि वा काफियाक शुद्ध प्रयोग करथि से भेलथि कट्टर आकि जे एकर विरोध करथि से भेला कट्टर? आ जँ बिन काफिया आ बहरक गजलकेँ गजल नै कहल जाए तँ ओ रचना महत्वहीन भऽ गेल? ओ गजल नै भेल, वा जीवन युगक मैथिली गजल भेल, मुदा गीत/ कविता तँ भेबे कएल। कोनो गजल मात्र काफिया आ बहरक शुद्धता मात्र रहने उत्कृष्ट तँ नहिए हएत, मुदा उत्कृष्ट हेबाक सम्भावनाक प्रतिशतता कए गुणा बढ़त। तहिना कोनो गजल सन रचना जँ अशुद्ध काफियामे आ *बे-बहर* अछि तँ सएह मात्र ओकर उत्कृष्टताक प्रमाण भऽ जाएत? एकर विपरीत हम ई कहऽ चाहब जे ओहनो रचना उत्कृष्ट भऽ सकैए, मुदा तकर सम्भावनाक प्रतिशतता भयंकर रूपेँ घटि जाएत।

गजल, रुबाइ, कता, हाइकू, शेनर्यू, टनका, हैबून, कुण्डलिया, दोहा आ रोला निअमबद्ध रचना अछि। एकरा अकविता, गद्य-कविता आ गीतक स्वरूप देलासँ अहाँ भाषाक कोन उपकार कऽ सकब, कारण अकविता, गद्य-कविता आ गीत तँ स्वयं स्थापित विधाक स्वरूप लऽ लेने अछि। छोट कविता क्षणिका भऽ सकत, हाइकू नै। कुण्डलिया, दोहा आ रोलाक निअम मैथिलीमे बनेबामे कोनो असोकर्ज नै भेल कारण ई सोझे आयातित भऽ गेल मुदा गजल, रुबाइ, कता, हाइकू, शेनर्यू, टनका, हैबूनमे वर्ण/ मात्रा गणना पद्धति जापानी आ उर्दू-फारसीसँ अहाँ लइए नै सकै छी। जापानक लेखन पद्धति अल्फाबेट (वर्ण) आधारित अछिये नै, तखन अहाँ ओकर गणना पद्धति कोना आयात कऽ सकब। ओकर तरीका छै। पाश्चात्य तरीका आ सिलेबल आधारित लेखन पद्धति सेहो जापानी भाषामे होइ छै, से तकर प्रयोग कऽ ओइ चित्रात्मक लेखनक सिलेबल आधारित शैलीक मिलान संस्कृतक वार्णिक छन्द गणना पद्धतिसँ कएल गेल आ ओकरा हाइकू, शेनर्यू आ टनका लेल प्रयोग

कएल गेल। तहिना गजल, कता आ रुबाइमे वैज्ञानिक आधारपर मैथिली भाषाक सापेक्ष निअम बनाओल गेल जइसँ गजल, कता आ रुबाइ मैथिलीमे दोसर भाषासँ एलाक उपरान्तो अपन मूल विशेषता बना कऽ राखि सकल। आ तकर बाद जे मैथिली गजल आ गजलकारक संख्यामे परिणामात्क आ गुणात्मक वृद्धि भेल अछि, से दुनियाँक सोझाँ अछि।

ऐ कनेक पैघ आलेखक बाद हमर किछु गजल, रुबाइ आ कता प्रस्तुत अछि।–

रुबाइ

कारी अनहार मेघ, आ नै होइए
कत्तौ बलुआ माटि, खा नै होइए
दाहीजरती देखि, हिलोरै-ए मेघ
भगजोगनी भकरार, जा नै होइए

कता

१

एक्केटा गप बुझबैत साँझ भेल बुझाइए
झूरो झमाने इजोरियो तँ कएल बुझाइए
ऐमे तँ अन्हरिये नीक कारी छल गुजगुज
नै कोनो रातिक आ नै दिनक मेल बुझाइए

२

सबहक सपना समेटल आ आगाँ बढ़लौं
ई सत्यक पथ छै निकलल सभ चलै चलू
निन्नोक बाद खुजल रस्ता बिन लीखक जे छै
से धांगल आब बाट बनल सभ चलै चलू

गजल

१

बझाओल गेलैए चिड़ैया एना रे
कहैए हितैषी ई शिकारी बड़ा रे

देखल निसाँमे जे जागल घुरै छी
सूतलमे जागल सपना सुना रे

किए गुम्म भेल जाइए आइ बोली
गुमकीक फानी फाड़ै कान एना रे

भेख बदलि राजा भिखाड़िसँ पूछै
फोँफ काटै छैं हमरा राजा बना रे

ऐरावत देखै ध्वनि आँखि तरंग
चढ़ि पार जाइ, हिलकोर उठा रे

२

भोरक लाली साँझक लाली देखा देलक किछु नै बदलैए
आसक पनिसोखा सतरंगी कहबीक किछु नै बदलैए

क्रूर स्वप्न आ सुन्दर जीवन देखलौं निन्नसँ जगलापर
कोना हम मानब जँ कियो ई कहलक किछु नै बदलैए

जे बदलि गेल विध- बेबहार सगर संसार चारू दिस
से जीवन मृत्यु, साँच झूठकेँ देखलक किछु नै बदलैए

दिनमे ग्रहण घुरल चिड़ै, दिन गेल कतऽ दुपहरिये
जयद्रथ वध हएत फेर विश्वासक किछु नै बदलैए

चलू चली बीतल अछि बेर, दोसराक बेर अछि आएल
ऐरावत नै कहियौ किछु, भ्रम छै नीक, किछु नै बदलैए

३
बहरे हजज
महामाला महाडाला स्वाहा करै लगैए ई
अकासी आस छै सोझाँ झझा देतै कहैए ई

कहैए ई मिलेबै आइ नोरोमे कने गोला
जँ भांगे पीबि एतै, भावना पीतै लगैए ई

जहाँ ताकी लगैए प्रेम बाझै छै सरैलामे
खने भोकारि पाड़ैए हँसै नै छै लगैए ई

टिपौड़ी छै बुझेबै बात की, धाही कनी देखू
कटैया पानि जेना ओ, नचै नै छै लगैए ई

गजेन्द्र पूब सुरुजक रहत देतै सूर्यकेँ झाँखी
चढ़त आकास देखै बानसब्बरै लगैए ई

४

मनुख जरैए गाम कनैए हमरा की

चद्दरि तनने फोंफ कटैए हमरा की

बान्हक कातमे घर बनेने बाट जोही
बाट बिसरि कऽ नै बिलमैए हमरा की

सुन्दर सपना रातुक, देखल बिसरी
सपना सच नै भेल लगैए, हमरा की

चलू चलै छी नव देशमे घृणा जतऽ नै
अप्पन देश बिलटि गेलैए, हमरा की

गारि देबाले बिर्त, देलक हम नै लेलौं
ऐरावत लेत प्रेम, नै दैए हमरा की

५

सोझाँ देखि मोन ललाइए चलू घुरि चली
ई आस अपूर्ण बुझाइए चलू घुरि चली

कोन पक्का रंगसँ ढौराबी जे धोखराए नै
मोनक रंगो धोखराइए चलू घुरि चली

छल बुझाइत छली आब बुझि गेल बात
छलबाक चालि बुझाइए चलू घुरि चली

ठकैए हमरा हम जानि-बूझि ठकाइत
प्राप्ति भेलै किछु बुझाइए चलू घुरि चली

भारी धापक धम्मक पसरि गेलै सगरे
ऐरावत ऐल सुनाइए चलू घुरि चली

६
खेत, आरि, रस्ता सभटा अहीं तँ छी
बेढ़ि चारूकात परता अहीं तँ छी

ओकर इयाद आबैए घुरि घुरि
इयादक याद अगता अहीं तँ छी

भजार मोन पड़ैए, बिदा होइ छी
टूटल सपनाक झंझा अहीं तँ छी

भोरे उदासी उड़ियाइत जाइत
जे बुन्नी बुनिऐल छिच्चा अहीं तँ छी

खुशी छूटल हँसी छूटल जाइए
दुख-सुखक अकाल जा, अहीं तँ छी

७

गुमकी लागै राति बुलैत चान झपाइ छी
घुरि जाइ गाम मुदा बीचे असकताइ छी

चरको परियानि ई बनेलौं कएक बेर
उबेरक बाट ताकी आ सुरुज कहाइ छी

अकास बिच सतरंगा पनिसोखा उगलैए
निराशसँ आगू जाइ बीचेमे लेभराइ छी

जे काज होइए पछता से काज ताकी हम
अगता काज आबैए जान कोना गमाइ छी

ओकरा देखि बुझलहुँ गढ़निक सोपान
बनैत- बनैत बनै मूर्ति अहाँ देखाइ छी

ढङीला छौरा धरैए भेष रूप बदलैत
दोहरी ई नस-नस बुझी हम चिन्हाइ छी

जे संगमे अछि सेहो छोड़ने अहाँ जाइ छी
राखब की लगैए पकड़ै लेल पड़ाइ छी

कानमे ठेकी आँखिमे गेजर मूह दुसैए
लेरचुब्बा नै डिग्गा मदारी जे कहै जाइ छी

बूझी बाजी करतेबता सँ बढ़ू एक्के सुरे
पेटो पानि नै मूह दुसै कनीले हुसाइ छी

छोड़ि कऽ चलि गेल छाह, परात, इजोरिया
ऐरावत दोसराइत अहाँ की कसाइ छी

८
नोर झरैए मोनक दागनि दगै छी
तराटक लागलए आ बातो बकै छी

कोनटा बचल नै एकान्ती ले एकोटा
अन्हरोखे उठै छी आ गनती गनै छी

अन्हरियासँ बेसी अन्हार जिनगीमे
ई इजोरिया किए अहाँ मुँह दुसै छी

पिआ गेलाह देशान्तर दूरस्त देस
कियो नै घुरै अछि से आसो नै तकै छी

भोरे अहाँ बिनु दिन फेर बजरल
ऐरावतसँ भारी ऐ दिनकेँ देखै छी

९

बहरे मुतकारिब मुतकारिब आठ–रुक्न फ ऊ लुन (U।।) – चारि बेर

उचरि नव रूप अपन लिखैब तखन किने
उतर दछिन डगहर   बहैब तखन किने

कनकन करत बनत सदिखन तलिया यौ
सुअद पैब जौँ अहँ झखैब तखन किने

मनक भूख असगर नुकैब बुझल अछि
अपन बोल-वाणी घुरैब तखन किने

खधाइ गढ़ अछि भरल सभतरि दहारे
जलक धार बिच घर भरैब तखन किने

निमहतासँ निभता निभैब सिखल नहि
नव युग कनिक उगल बुझैब तखन किने

पड़ाइनपर कनैत अछि भाग जँ कतौ
गजेन्द्र मन बूझै हियैब तखन किने

१०
बहरे मुतकारिब
बहरे मुतकारिब मुतकारिब आठ–रुक्न फ ऊ लुन (U।।) – चारि बेर

अहाँ बूझि लै छी जुआरी अनेरे
जिबै कोन बैबे नियारी अनेरे

हहारो उठेलौं उदासी गबेलौं
सिहाबै किए छी मदारी अनेरे

जतेको नबारी छबारी बुरैए
घुरेबै कियो नै सुतारी अनेरे

घरोमे उपासे बहारो निरासे
दहारे अकाले नचारी अनेरे

चलै छी खटोली उठा ऐ भरोसे
भसाठी अबैए विचारी अनेरे

११
गुम्म भेल जे ठाढ़ भेल छी मुनल मूह मटकुरिए नीक
बाट तकै बहार भेल गजर-गजर तकनहिए नीक

धन भेल थोड़ बिपत बड़ जोर प्रेमक राग बिसरलौं
प्रेम दफानि बिसारै से गदह-पचीसी बुझनहिए नीक

जे देखलक बरियारक गाछ कहलक बिरदाबन ईहे
उड़कुस्सी लागै दलानपर छै आब उजड़नहिए नीक

जकरा कतहु ने छै पुछारी से अछि सौराठक नोतिहारी
चन्द्रोगत नै प्रेम अछिञ्जल से आब बिसरनहिए नीक

हाथी अपने पएरे भारी चुट्टी अपने पएरे भारी अछि
ऐरावत प्रेम-जिंजीरसँ छारल तैं ठोकरेनहिए नीक

१२
अकत तीत प्रेमक जे पथिक अदौकालसँ
धतालबूढ़ प्रेमकेँ बोहेलक दुनू हाथजँ

निर्मल आंगुरसँ छूबै जे ओकर पुठपुरी
फरफैसी पसारै निदरदी अगिलकण्ठ जँ

निमरजना प्रेम जे छलै धपोधप निश्छल
बिदोरै लेल प्रेमीकेँ छलै ओ कड़ेकमान तँ

अकरतब कर्तव्यमे भेद नै बुझलकै जे
जराउ प्रेमक गप्प नै कहियो नुकेलकै जँ

खञ्जखूहर ऐरावत नै बाटक छेँ बाटमे
धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ

१३
अंतहीन अंत ऐ सोचनीक होइए
भासो नै बनैए नै चित्र पूर लगैए

ऐ रंग आ तरंगक नै भेटैए बाट
सोचैत भँसियाइत मगज फटैए

नै बाजैए बाट जे छोड़ि चललौं कतऽ
आँखि बाजैए बिनु बजने बुझबैए

आदति जे लागल वेदना सहबाक
गेंठ बनैए से सोहनगर लगैए

ई गुमकी बढ़ल खत्म हएत की
खरचण्डाली प्रेम पिसीमाल भेलैए

१४
छोड़ि कऽ हमरा ई जे ओ जा रहल अछि
हृदैकेँ चीरैत जे सुनगा रहल अछि

नीक लगै छल ओकर बोलक संगोर
जाइए आइ हृदए कना रहल अछि

नै बुझलिऐ ई एते बढ़ल अछि बात
देखल आइ जे ओ भँसिया रहल अछि

हमरासँ कते की माँगै छल रहरहाँ
जे जुमल ओ बिनु लेने जा रहल अछि

ओकर हाक्रोस हमर चुप्पी सुनै छल
बाजब से बिनु सुनने जा रहल अछि

बात तँ छलै जड़िआएल तहिआयल
बीझ काटि बिनु पढ़ने जा रहल अछि

ककरा कहबै ई जे पतिआएत आइ
उपरागो बिनु सुनेने जा रहल अछि

घुरत नै देखैल अपनैती अपन ओ
आँखि शून्य हृदए हहरा रहल अछि

के टोकत एको बेर रुकि जाउ कहत
मुँह सीयल शून्य कनीटा रहल अछि

१५
की कहबै, कोना कहबै, जे बुझतै ओ लुझतै ओ
आँखिक नोर खसतै, खन रूसतै-बिहुसलै ओ

दाबी देखेतै आ हम देखबै नुका कऽ अँचरासँ
बहरा जाइ छी घबरा कऽ, नै ताकै ओ ने बाजै ओ

देखितिऐ अँचरासँ, आ बहरा जैतौं दुअरासँ
मोनसँ बेसी उड़ै चिड़ै, चिड़ैक मोन बनतै ओ

बनि माँछ अकुलाइ छी बाझब जालमे कक्खन
जँ फँसि त्राण पाएब आँखि बओने से देखतै ओ

चम्मन फूल भमरा, गुम्म, जब्बर, छै सोझाँ ठाढ़
जलबाह सोझाँ माँछ, ऐरावत बनल, देखै ओ

१६
आँखि ओङठल जाइए कहू की करी
नै बुझलौं तमसाइए कहू की करी

ज्ञानी बनै लेल जाइए देश छोड़ने
ई मोन जे पथराइए कहू की करी

धानी रंगक आगि पियासल किए छै
धाना निश्छल धखाइए कहू की करी

धान छै खखरी बनल अहिठाम आ
धानी आगि धुधुआइए कहू की करी

आगिक संगी पानि अजगुत देखल
धौरबी बनि सोचाइए कहू की करी

ऐरावत धोधराह धुधुनमुहाँ नै
जरि फाहा बनि जाइए कहू की करी

१७
मिरदङियाक तरंग भँसियाइए अङेजब कोना
सुनि मोन घुरमाइए अकुलाइए अङेजब कोना

आँखिक नोर झरलै बनलै अजस्र धार झझाइए
पियासल छी ठाढ़, जी हदबदाइए अङेजब कोना

सगुन बान्हसँ बान्हल ऐ मोनक उछाही बिच
ठाढ़ सगुनियाँ बनल उसरगाइए अङेजब कोना

हरसट्ठे अपने अपन चेन्हासी मेटा लेलक आइ
मुरुत हरपटाहि बनेने जाइए अङेजब कोना

छरछर बहल छै धार मोनक, देखू चलल अछि
धेने जे बाट उधोरनि बनि जाइए अङेजब कोना

उड़ैए चिड़ै आ बहैए अनेरे ऐ नील अकाश बिच
ऐरावत-मन जखन उधियाइए अङेजब कोना

१८
छोड़ि रहल अछि, भिजा कहल अछि
ई की होइए, मिझा रहल अछि

कैन ओसूलि कऽ ठठा रहल अछि
क्षमा करत नै देखा रहल अछि

दोसरा सोझाँ नीक बनत आ
एसगरमे शैतान बनल अछि

बाँचि रहू ओकरासँ ओ जे
किछु हारैले नै बचा रखल अछि

देखल जानल सेहो आइए
रक्षादीप से मिझा रहल अछि

सुन्दर स्वप्न देखि देखा कऽ
जाएत ओ जे सुना रहल अछि

१९
छोट-छीन सन बात बहुत अछि
मुँह बिधुऔने ठाढ़ तुरत अछि

ककरा की कहबै के पतिआएत
गह-गहमे अर्थात बहुत अछि

भयौन बनि ओ अछि ठाढ़ सोझाँमे
हाथक गहमे हाथ बहुत अछि

नीक काज देखि गुमसुम छी ठाढ़
चबासी दऽ दियौ बात बहुत अछि

ओकरहि पाछाँ सभ चलू चलै छी
बदलि देत विश्वास बहुत अछि

२०
दोस्तियारी बिना ई राह कठिन अछि
निभरोस रहू तँ काल्हि चलब गछि

अनठेने नै दै छी कान बात किए यौ
घृणो तँ करू जँ सएह भरल अछि

केलहुँ जखन जे काज सेहो नै हट्ठे
भेल नै होअए से काज केलहुँ अछि

सनेस हमर जे नीक नै लगलनि
प्रेमक दूट आखर केओ सुनै अछि

जे फुलवाड़ी लगा कृपा करै जाइ छी
आपरूपी बूढ़ नेना बनैत अछि

२१

बिसबासी लोक जे जीवनमे हमर
प्रेम लै-दै बला समाजक परिचर

चिन्ताक मोटगर रेख कपारपर
छल छोट से बनल आब छेबगर

जतेक माँगलक देलहुँ बेशिये कऽ
रेख नहि आओल कखनो माथपर

जकरा पदक होश बेहोश बनौने
घृणा चक्कूओसँ बेशी अछि धरगर

दोसराक दर्दसँ दुखी भेलहुँ अछि
नेनोसँ बेशी जे भेलहुँ सुखितगर

२२

खेत-खम्हारक काज कऽ सकलहुँ
सप्पत देल गप्प निमाहि देलहुँ

बिसबास रहए तेँ झगड़ा-झाँटी
पाइ तँ आएल समए गमेलहुँ

झगड़ा करैत छी बहुत अहाँसँ
प्रेम करैत छी बुझा ने सकलहुँ

आकांक्षाक पजरैत अग्निक बिच
पैघ छी तकर चेन्हासी कहलहुँ

देखै छी बजै ने छी कोना ने ई कहू
हमहूँ ओहिना घुरा कऽ कहलहुँ

२३
भय रहित सत्यसँ भेँट भेल
सुरेब सम्पूर्ण छल अविचल

चित्रक रंगक करतब लेल
उद्देश्यक पाछाँ भटकि रहल

बड़का सन काजक छाह अछि
देखल विस्तृत सुन्दर बनल

आजुक बात खतम होएत यौ
भोरुका बसात से बिर्रो बनल

पूछू सभसँ आ छोड़ू नै ककरो
नव विहान किए छल रोकल

२४
दिन-राति बीतल से मोन पड़ल ऐ
अपन आ आनोपर भरोस अछि ऐ

आस्ते सँ जे सिहकि उठल ई बसात
अन्तर्मनक शक्ति बदलि देत सत्तै

विश्वासपर अडिग चलि रहल छी
नवजीवनपथ समस्या ने कोनो ऐ

सिखबाक ई इच्छा खतम भऽ गेने की
मगजक शान्ति भेटत के ई कहै ऐ

ओहि सोचल बुनल असत्य बातक
सत्यक प्रति ई नरम जे भेलहुँ ऐ

मोन पाड़ल नीक खराप बिसरि कऽ
मित्र बढ़ल अछि आ शत्रु कमल ऐ

२५
छातीक धरधड़ी घटि बढ़ल अछि
पएर थाकल बेहोशी थम्हल नहि

प्रेममे पड़ि घुरमि हम रहल छी
साँस फुलल आ उद्वेग कमल नहि

निन्नक मारल अछि आँखि फुलल ई
प्रेमक सभटा आख्यान कहल अछि

कहू किए अछि ई चित घबड़ाएल
स्मृति हँसि सूरति बदलल अछि

माँछ बिनु पानिक उन्टा प्रेम हम्मर
प्रेम पाबि खटबताह बनल अछि

हँसैत ओकर जे मुँह हम देखल
सुन्दर सलिल ई धार बहल अछि

आस बहुत छल क्षणमे से बीतल
आस निराशमे कोनो अन्तर नहि

प्रेम पियासल मोन भेल उचाट ई
ई बिसरि गेने तँ बाट बहुत अछि

२६
बकथोथीसँ काज चलत नै
आत्म प्रशंसे बात बनैत छै

भौकीसँ हम नै घबड़ाएब
पथमे प्रतिकार करब नै

भार मिलि- कऽ सभ उठबै छी
उठल नै आ की गुड़कल नै

खतम करू बात बड्ड भेल
ठठा हँसू तँ बात बढ़त नै

देखि छूबि अनुभूतिक क्षण
ई पाँती इतिहास बनत नै

२७

तेजगर छी से छद्म ज्ञान भेल
खिखिर कटाबै भौकी प्रतिपल

हिल्कोरक संग जाइत बहैत
संग हमर जे घास-फूस छल

अकलबेर मे बिसरि गेल जे
गिरिमाल लेने ठाढ़ ओतै छल

सूर्य-किरिण से मद्धिम-मद्धिम
सेहो गर्दासँ झँपा रहल छल

नटुआ बिपटा बनि हँसै अछि
तोहूँ हमरे सन अछि देखल

जागि अन्हरिया केलहुँ काज जे
सेहो मस्त ओंघाएल सन छल

आन्ही संग झमटगर अछार
बान्ह एखनो अछि सुखा रहल

शान्त भंगिमासँ काज करै जाउ
निराउ वर्षा अछि देखा रहल

मानरि-अबाज रहि कऽ अबैछ
झाँपि बोल ई सुना रहल छल

गप बिच्च ठकुरा दैत रहै छी
काज करू धए कए करिनाल

ताहि मनुख-गाछी भुताहि बिच
ओ मनुक्ख गन्ध सूंघि सहै छल

२८
बानर पट लैले अछि तैयार
बिरनल सभ करू ने उद्धार

गाएक अर्र-बों सुनि अनठेने
दुहै समऐँ जनताक कपार

पुल बनेबाक समचा छैक नै
अर्थशास्त्र-पोथीक छलै भण्डार

कोरो बाती उबही देबाक लेल
आउ बजाउ बुढ़ानुस - भजार

डरक घाट नहाएल छी हम
से सहब दहोदिश अत्याचार

ऐरावत अछि देखा - देखा कए
सभटा देखैत अछि ओ व्यापार

२९
कानैत दुनू बच्चाकेँ देखलहुँ बिछुड़ैत गेल
सम्वेदना छै बाँचल जकर चहुँदिस अकाल

बिसरी हँसैत खिलखिलाइ अनमुनाह सन
अछि बुरबक बताह मथसुन्न अछि ई काल

गम्भीर बात विचारेँ ओढ़ल देखल कलुषता
काल सन चंठ अछि सम्वेत ई सुन्ने देखाएल

लाल सूर्यकेँ पीअर कपीश होइतहिँ ओकर
पाँजड़ दबल मनुषता ई-ओ-हे जाइत काल

सुन्न-मसान बोनक मचानपर बैसल छी की
भगजोगनीक बाड़ल भकराड़ ई राति भेल

ऐरावत देखैत इजोतक बिर्रो- बाढ़ि- दुर्भिक्ष
ग्रहणक ई सूर्य थाकल देखै छी चोन्हराएल

३०

रातिक इजोरिया देखि रहल तारा कहलक
तरेगन छोट तैयो इजोतक खिस्सा कहलक

चन्द्रमाक इजोतक चर्च तँ बड़ होइ छै
एहि पिरौँछ इजोतक खेरहा कहलक

उज्जर दपदप इजोतक ई इजोरिया
देत संग अन्हरियामे फरिछा कहलक

पिरौँछ सरिसव फूल हँसि रहल अछि
ई इजोरिया पिरौंछ किए हँसा कहलक

३१
जे ई गप अहाँ हमरासँ ने कहितौं
जे फूसि-फटक हमरासँ ने करितौं

मोनमे रखबाक हमरा जे रहितै
तँ कोनो आन बहन्ना नै बना सकितौं

ई ठोढ़क फुफरी चानिपर पसेना
घाम चुबैत सुगन्धि पाबि सुरकितौं

आरि-धूर बाटे चली आ जा कऽ पहुँची
बीच सड़क ठाढ़ छै रोकि ने सकितौं

३२

पिपनी झुकल डिम्हा उठल करजनी सन आँखि छै
की की बीतल नै कहि सकब कहि सकब एखन नै

आ देखल मेघक टिक्कर खसि रहल छै अकासमे
हुलसि ताकल खेत दिस, उल्लास पर्वत चढ़ल ऐ

चढ़ल ई आबि रहल, ई धार बाढ़ि बनि कऽ केहन
बाँचल रहत हमर जलोदीप की गाम हमर ऐ

३३
जाऊ कत्तऽ टिटही सेहो इजोरियामे भागल
अन्हरिया राति आ जिनगी झूर-झाम जे भेल

कते बुझाएब ककरा ई, कते सम्हारब की
जिनगीक प्रयाण संग रस्ता संग्राम बनल

लोथ प्रेत राकश बिच ठाढ़ छी असगर की
मनुक्ख लगैए जे लहास जिनगीक उठल

साँझ अन्हरगर अछि, राति अछि बाँचल की
की भोरक बाट ताकू? फेर साँझ घुरि आएल

इजोरिया छैक कतबो, छै तँ रातिये सगरो
दिनोमे ग्रहण आ सगरो अन्हार पसरल

३४

दिन देखारे जे अन्हार भऽ गेलै
बिन केने अढ़ ओहार भऽ गेलै

हनिकय फेकी विचार मोनक
फड़िच्छ भेने बेसम्हार भऽ गेलै

ओइ कात देखलौं सभ खेरहा
ई तँ घाटाक बनिजार भऽ गेलै

गोंहि आएल अछि हमरा टोल
जलसमाधि तँ व्योपार भऽ गेलै

ऐरावत गज-ग्राहक गज नै
दुनूमे मेलक नियार भऽ गेलै

३५
आजाद गजल

एकटा आस एकटा पियास छोडि आयल छी
घुरि एबा लेल एकटा निसास छोडि आयल छी

मोन पडैए ओ राति डेरायल आँखि अप्पन
डरक इयाद आ अँखियास छोडि आयल छी

देखी रूप बदलि अबैत हितक स्वांग भरैत
आगि संग अछि, धुंआक झांस छोडि आयल छी

देखू जिनगी कतेक सुंदर, स्वप्न डेराओन किए
भूत सूति गेल, जागल अकास छोडि आयल छी

ऐरावत जागि राति बिता देत स्वप्नसँ हारत नै
स्वप्न बदलि जाएत एकटा प्रकास छोडि आयल छी

३६

भोरक बसात धाह दैए रहि रहि
नोरक टघार थाह दैए रहि रहि

बूझि कऽ सवाल जाइ छी ओइ दिस जँ
पूछल सवाल चाह दैए रहि रहि

थालक खिचाहिनो अबै छै शिथिल भऽ
रोपल पएर आह दैए रहि रहि

झूठक बहैत धार छै जे थमकल
उनटि बहलै तँ डाह दैए रहि रहि

लेलक उमंग संग बोली कुचरल
पसरि कऽ गजेन छाह दैए रहि रहि

३७
सम्हरि उठैत डेग सुदिन्न भेल उसरि गेल
सम्हरि रखैत मोन बिखिन्न भेल उसरि गेल

डंकक अबैत चोट सुनैत भेल दिन कतेक
ऊहि अबिते अबैत विभिन्न भेल उसरि गेल

ऐ पहर होइए सगरो अबेर नहि उबेर
राति अबिते निसाँस कृपिन्न भेल उसरि गेल

घामे भिजलौं किएक सकाले रौद बरसि गेल
मेघ बरिसैत मुदा छिन्न भेल उसरि गेल

साँझे अखनो अबैत पराते जाइत अछि लोक
लोक कतए रहता भिन्न भेल उसरि गेल

३८
रौँउ-झाँउ बीच वएह बनलिऐ
बूझि फेर बात सएह बनलिऐ

बूरि ई बलेल जकाँ हँसिते छलै
बेर बेर बाजि सएह बनलिऐ

हूलि हूलि काज करैत देखलिऐ
हूरि भूर जा कऽ सएह बनलिऐ

लच्छनो तँ बापक जिद्द गुनलकै
नीक तीक भूलि सएह बनलिऐ

जाह जाह ऐलऽ बड़ा बकबकिया
मारि मारि मोन सएह बनलिऐ

३९
बूझि सकलौं नै निशाभाग राशिक खेरहा
लूझि सकलौं नै परातीक पाँतिक खेरहा

से तँ बुझलौं छी अगारीक लोकक भेद ई
रूसि तकलौं छी निरासीक कांतिक खेरहा

देश बढ़लै बूझि गाबी जँ आगुक गीतकेँ
देखि भगला जे टटीबाक शांतिक खेरहा

सूंघि देखलौं मूक भेलौं अकच्छ भऽ भूकिकेँ
से जँ सहतै से देखेबै अप्राप्तिक खेरहा

भागि अबि जैतौं अबेरो अनेरक बात ई
गज्जु कटिहारीक टाटी छऽ फूसिक खेरहा

४०

आजाद गजल

दिन बीतत बर्ख घेरत ढङ बदलब तखनिते
सोच बीतल बोल जीतत ढङ बदलब तखनिते

सोचैत सोची हम जेहेन हमरे सँ दुनियाँ
दुनियाँ बदलब लोक बदलत ढङ बदलब तखनिते

जेहेन प्रेम भेटल तहिना नै लुटेलिऐ लुटबियौ
प्रेम करियौ प्रेम भेटत ढङ बदलब तखनिते

की छै एकरामे फुसियाँहीक झठहा फेकैए
पागल बनैक फैशन के टेरत ढङ बदलब तखनिते

जे ओ बाजए से ठीक जे हम बाजी से अधला
बाउ सुधरू नै सैंतत ढङ बदलब तखनिते

४१

बाल गजल

कनियाँ पुतरा छोड़ू आनू बार्बी
जँ रंग गुलाबी छै तँ जानू बार्बी

बोने-बोने फिरैए जे दैता सभ
वनसप्तो लऽ घूरलि मानू बार्बी

सात रंग लऽ भोर भेले गाममे
परी रहैए गाम अकानू बार्बी

कननी दूर हेतै बच्चा सभमे
भरल आँखि बिसरी ठानू बार्बी

पानि अकास धरती जा-जा घूमी
पंख लगा टिकुली अकानू बार्बी

धम्म गुड़िया संग खेलू कूदू
राति सपनाउ निन्न आनू बार्बी

सुता दियौ ऐ गुड़ियाकेँ आ सुतू
चढ़ि ऐरावत दिन गानू बार्बी

सूचना: बहुत रास बहरयुक्त गजल अछि जतऽ बहरक नाम देल गेल अछि, जइ गजलमे बहर नै छै ततऽ आजाद गजल लिखल गेल अछि। जतऽ ने बहरक नाम लिखल अछि नहिये आजाद गजल लिखल अछि से सभ सरल वार्णिक बहरमे कहल गेल अछि। वार्णिक छन्द सभसँ कठिन, मात्रिक ओइसँ हल्लुक आ सरल वार्णिक सभसँ हल्लुक अछि, मुदा गायक लेल वार्णिक छन्द सभसँ हल्लुक, मात्रिक ओइसँ कठिन, सरल वार्णिक ओहूसँ कठिन आ आजाद गजल (बिनु बहरक) सभसँ कठिन अछि।

